दिव्य आदेश

(भाग छः)

रामचन्द्र

श्री रामचन्द्र मिशन

शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

दिव्य आदेश

(भाग ६)

इरशादात हज़रत क़िब्ला पीर

दस्तगीर श्रीमान रामचन्द्र जी

साहब फ़तहगढ़ी, जिला फ़र्रुख़ाबाद

मन इब्तदाई 2 दिसंबर,1945 लग़ायत 31 मार्च, 1946 ई०

प्रथम संस्करण - २००२, ११०० प्रतियाँ

©श्री रामचन्द्र मिशन

मूल्य रु० : 60/-

प्रकाशक :

श्री रामचन्द्र मिशन

प्रकाशन विभाग

शाहजहांपुर, उ०प्र० (भारत)

मुद्रक :

खन्ना आर्ट प्रिन्टर्स, WZ-190, शादी खामपुर

वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-110 008

प्रस्तावना

आप सब बाबूजी महाराज और उनकी शक्ति के बारे में जानते हैं, और अपने जीवन में उन्होंने विश्वबन्धुत्व को फैलाने का प्रयास किया और कहा कि भाईचारे से ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है। और जरा सा संयम अगर वर्ताजाप तो उनके बनाये हुये सिद्धान्त और सहजमार्ग की महत्ता को हर अभ्यासी को समझने में मुश्किल न होगी। यह एक practical method है इसे अमल करना ज्यादा और बात कम करने पर बल दिया गया है।

इस पुस्तक में महात्मा बुद्धजी की जीवन, शैली तथा उनकी कृतियों के बारे में हमारे बाबूजी ने कुछ ऐसी झलकियां दी हैं जो आपको किसी भी पुस्तक में मिलने वाली नहीं हैं। महात्मा बुद्धजी के साथ याज्ञवल्क्य जी के बारे में भी दर्शाया गया है। यह सब बातें एक dictation के रूप में बाबूजी के सामने आयीं और उसे दिव्य आदेश के रूप में दर्शाया। महात्मा बुद्ध ने जब हमारे बाबूजी महाराज से बात की, जैसे और बड़ी-बड़ी हस्तियों ने बाबूजी को एक माध्यम बनाया और सारे काम जो दुनिया में होने वाले हैं या होने हैं उनके पथ प्रदर्शक के रूप में नियुक्त किया। तथा Lord Krishna एसे अवतार पुरुष ने बाबूजी महाराज को ही लालाजी महाराज का सज्जादा नशीन घोषित किया। यह बात भी कही गई है। यह किताब कोई कहानियों के आधार पर नहीं है बल्कि जो हमारे बाबूजी महाराज को उनकी जिन्दगी में बड़ी-बड़ी हस्तियों से dictations आयें, वे बाबूजी महाराज ने अपनी डायरी में लिख कर हम सब को धन्य कर दिया जो हम बाबूजी महाराज जैसी हस्ती को समझ सकें और दुनियां को जागृत कर सकें। अगर इस दुनियां ने अब तक उन्हें नहीं समझा तो अब भी समय है उनको समझने के लिये।

21वीं सदी का दौर तो चल रहा है। और जो परिणाम आने वाले हैं वो सुखद नहीं मालूम होते। बाबूजी महाराज ने जिस मार्ग की स्थापना की, उसका नाम *सहज मार्ग* रखा, जो लोगों की जिन्दगी में मदद कर सकता है अगर लोगों में सद्बुद्धि का विकास हो और हमारे बाबूजी महाराज के कदमों पर चल कर उनके उस कथनी पर विचार करें कि destruction स्वाभाविक है जो हम सब के लिये खतरा बन सकता है।

सहज मार्ग एक ऐसा मार्ग है जिसमें जात-पात, धर्म का कोई स्थान नहीं है। इसकी सीढ़ी का पहला step भाईचारे से आरम्भ होता है और ईश्वर प्राप्ति तक पहुँचता है। यही काफी नहीं है, बल्कि उस के आगे भी बहुत कुछ मिल सकता है। अब ये आपके ऊपर है कि आप कितना परिश्रम करें और बाबूजी महाराज की आप पर कृपा हो। इसके अलावा *दिव्या आदेश भाग* ६ में लार्ड रामा, लार्ड कृष्णा के कुछ वार्तालाप व उनके आदेशों को अपनी डायरी में लिख दिया, जिन्हें हम आपको पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। और इस तत्व को जानने के बाद पाठकों को काई मन में भ्रम होना नहीं चाहिये, अगर वो इस सच्चाई को जानना चाहे कि *सहज मार्ग* की बाबूजी महाराज ने स्थापना क्यों की और उसकी नींव (foundation) क्यों रखी गई। उनको मालूम था कि २१वीं सदी की दौड़ उतनी ही घातक है जितना राम-रावण युद्ध, लंका का विनाश, महाभारत के दृश्य के बारे में जो सोचते हैं तब सोचने के अलावा कुछ चारा नहीं रहता है, बल्कि यह कहकर छोड़ना पड़ता है ईश्वर इच्छा। यही दृश्य २१वीं सदी में आप सब को देखना पड़ेगा। और आप सब यह आशा कर सकते हैं कि बाबूजी महाराज के आशीर्वाद से हमारे अभ्यासी भाई बहन बच तो सकते हैं, पर कुछ न कुछ भोग का हिस्सा (share) उनको भी मिलेगा।

इसलिये हमारा सुझाव है कि हर इन्सान को किसी न किसी रूप में ईश्वर से लगाव रखना आवश्यक है और हर एक अपने गुरु को चुने, जो उनको ईश्वर तक पहुंचा सकता है। यह सारे messages एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं वे पढ़ने व समझने योग्य हैं और जो भिविष्य वाणी की बाते लिखी गई हैं उस को अमल कर ईश्वर से प्रार्थना करें कि हम सब को एक अच्छा जीवन मिले और आगे वाले समय को किस प्रकार सुधारें जो उन पर विपदा न आयें। हर इन्सान को जात पात, धर्म का महत्ता न दे कर एक इन्सानी रूप में देखने का प्रयत्न करना चाहिये। यही हमारा सुझाव है।

उमेश चन्द्र
अध्यक्ष
श्री राम चन्द्र मिशन,
शाहजहाँपुर।

दिव्य आदेश - भाग ६

2.12.45

हज़रत क़िब्लाः तुम्हारा एहसास वकील बदायूनी की निस्बत सही है। तुम उन्हें इतना दे चुके हो कि एक अरसे में हज़्म कर सकेंगे। मौजूदा हालत उन की जिस को तुम ने whirl के नाम से मन्सूब किया है, यह है। इस वक़्त छेड़ने की ज़रूरत नहीं।

3.12.45

हज़रत क़िब्ला : सब से बड़ा दुश्मन कौन?

इज़्ज़त!

15.12.45

Swami Vivekanand(S.V.): Look here - Godly work is suffering. I give you 6 month's time to complete it. Proceed to Benares and then to Orissa in the month of June.

Lord Chaitanya, who is here, is digusted from his disciples. The Hindu supremacy was established in India and abroad. Egypt was the seat of Lord Manu. It was thought a part of India. You will have to carry on the torch of spiritualism there as well. The work before you, you cannot imagine? You will have to carry it out within your lifetime. No one is coming behind you, as strong as you have been made. Exercise your special powers in the matter and prepare

the persons in soonest possible way for the work. Stock of work is in hoard for you and you would not complete yet the daily lesson. The reason attributed to, no doubt, is your health, but there is no remedy.

हज़रत क़िब्ला : उड़ीसा तुम को जाना पड़ेगा। **बनारस** होते हुये जाना और वहाँ का काम ख़त्म कर के फिर आगे बढ़ना।

जग्गू : भाई साहब इस वक़्त मैदान मार के आओ।

S.V.: The principal work will be allotted to you there (Orissa). Had you been quite healthy, I would have ordered you to proceed to **Egypt**. Where there is a will, there is a way.

16-XII-45

S.V.: I am leaving this note in your diary, for your disciple to complete it. If you may be wanting in any way to do it.

17-XII-45

श्री कृष्णजी महाराजः मेरी तरफ़ से कह देवें कि सब सिलसिले टूट चुके हैं। **सिलसिला हिन्दुवाना क़ायम हो गया है**। उस में सब लोग बैअत हो रहे हैं। और कुछ के connection संभाल दिये गये।

हज़रत क़िब्लाः मदन मोहन लाल, एक मुश्किल यह पड़ रही है कि इन बातों को कोई मानता ही नहीं। वो समझ रहे हैं कि यह मन घड़न्त है और यह नहीं सूझता कि तुम ने जो बैअतें कीं, वो इसी सिलसिले में तो कीं। क्या आप का मतलब उन को डुबो देने का था या धोखा देने का। अगर वो अपने शिष्यों का ज़िम्मेवार अपने आप को समझते हैं तो

क्या तुम नहीं समझते या उन से कुछ कम ज़िम्मेवारी महसूस करते हो। एक सवाल यह ज़रूर हो सकता है कि **राम चन्द्र** को हर शख़्स तालीम देने के लिये तैयार था। और दी भी। किसी ने कम किसी ने ज़्यादा। अब यह कैसे हो गया कि उसी में सब बातें ज़हूर पज़ीर हुईं। एक बात याद आई। अगर **क़िब्ला मौलाना साहब (रह०)** के वक़्त में यह बातें जारी या रुख़सत होतीं तो शायद हज़रत के हमअसर मोतरिज़ होते और न मानते। फिर क्या होता। मेरा सिलसिला चलता रहता। अब भी ऐसा ही समझ लो, अगर वो न मानें। इस बात का मानने वाला (एक वक़्त में) हमेशा एक ही हुवा है। इस लिये कि **क़ुदरत उसी को अपना औज़ार बनाती है जो उस से (ख़ूब) चिपट चुका हो। उस पर इल्हाम भी होते हैं और वो ही उस के मतलब का होता है। उसी से सिलसिला चलता है।** अब रही यह बात की दूसरे भी मान जायें, यह एक मुहब्बत है। कोशिश करना चाहिये। ऐसे शख़्स के अगर जानने वाले बहुत से हो जायें तो हस्ब मन्शा-ए-क़ुदरत इस तरह का तफ़ावत न रहे। मगर ऐसा हो क्यों। क़ुदरत तो यह ही चाहती है कि सेहरा एक ही के सिर रहे और ऐसा ही हुवा करता है। आशिक़ सच्चा एक ही माशूक़ चाहता है और यह बात क़ुदरत तक चली गई है। मैं ने भी यह ही चाहा और हर शख़्स यह ही चाहता है। पतीव्रता बीवी एक शोहर चाहती है और पुरुष भी इसी तरह से एक ही तरफ़ रुजूअ होता है। बस ठीकम ठीक ऐसा ही समझो। (ज़्यादा) समझाने की ज़रूरत नहीं। क्या-**श्री कृष्ण** इस बात का दावा कर सकते हैं कि उन्हों ने मुझ से मुहब्बत की। हरगिज़ नहीं। अगर मुहब्बत होती तो यह मुआमला सब से पहले उन्हीं पर खुलता। यह मुहब्बत की दौड़ धूप और तगापो थी जो उन में मेरे आख़री वक़्त तक रही। गिलास में पानी ले आना या

मेरी ज़रूरियात को बिला कहे पूरी कर देना, दलीले मुहब्बत तो है, मगर इस को मुहब्बत नहीं कह सकते। -- मिसालें मिलेंगी कि नौकर जिस को मालिक के मिज़ाज की ताड़ पैदा हो जाती है, वक़्त-वक़्त पर वो वही काम करता है जो मालिक की ज़रूरत होती है। अभी ज़रा उस को बरख़ास्त तो कर दीजिये, देखें तो फिर वो आप के यहाँ फटकता भी है या नहीं। एक बात और कहूँ। अच्छा मान लो कि उन को मुझ से मुहब्बत थी तो **रामचन्द्र** के लिये आप पानी ले कर क्यों नहीं पहुँचते। अगर कशिश थी तो यह बात उन से अज़ख़ुद सरज़द होना चाहिये थी। क्या ऐसे वाक़यात नहीं हुये हैं कि बुज़ुर्ग के जाने के बाद उन के शिष्यों ने उन की (रुहानी) औलाद से मुहब्बत की। यह क्यों? यह ख़याल था कि इस में (पीर का) बीज मौजूद है। और यह दूसरी शक्ल पीर की है। क्या ऐसा नहीं है। नहीं है, और यह तरीक़ा है जिस का मुशाहिदा और होता है। क्या मेरी समाधी उन को प्रिय नहीं मालूम होती। यह क्यों? इसलिये कि मेरी जली भुनी हड्डियाँ जो चूना हो चुकी हैं, वहाँ मौजूद हैं। अब ऐसा क्यों है कि उन हड्डियों की तरफ़ तबियत खिंचती है। क्यों? इस लिये कि उन्हें उन हड्डियों से मुहब्बंत थी। ज़ात से लगाव और मुहब्बत बिल्कुल नहीं थी। अगर होती तो ऊपर लिखा हुवा अम्ल लाज़मी तौर पर इस के साथ करने लगते। एक क़िस्सा सुनाता हूँ। सुनो। रामचन्द्र को यह तमीज़ कभी न हुई, बजुज़ ख़ास सूरत में, जब कि मेरी ही मन्शा इस के लिये थी कि गुरु महाराज को इस वक़्त कपड़े पहनने की ज़रूरत है, पहना दो। जूते पर पालिश कर दो। इसलिये कि कचहरी जाना है। वजह क्या थी कि उस को इतनी फ़ुरसत ही कहाँ थी कि इन बातों को समझता और सोचता।

वो तो मुझ से चिपक कर रह गया था और अन्दरूनी मुशाहदात में अज़ख़ुद रफ़्ता हो गया था। उस को उसी से काम था जो काम की चीज़ है। ख़याल में दूसरी बात आने ही नहीं दी। यह मुवाज़ना मैं ने इसलिये किया है, वरना इस की ज़रूरत नहीं थी कि अपनी मुहब्बत को, इस की मुहब्बत को तौल लें और यह ख़याल भूल जावें कि मैं ने ज़िन्दगी में **हज़रत** से बहुत मुहब्बत की है। यह चीज़ भी सद्दे-राह हो रही है। यह बारीक बातें हैं। **मदन मोहन** के discussion के लिये अगर पड़ जाये, सब बता दी गई।

एक सवाल **श्री कृष्ण** आप से यह भी कर सकते हैं, जैसा कि मैं ने ऊपर कहा है कि अगर उन में मुहब्बत होती तो **रामचन्द्र** के साथ वो ही बातें अमल में आतीं जो मेरे साथ थीं कि अगर **रामचन्द्र लालाजी** के रूप बन गये होते तो अज़ख़ुद मुझ से वो ही बातें सरज़द होना चाहिये थीं। यह होता कैसे। उन्होंने गोश्त और पोस्त से बनी हुयी चीज़ से मुहब्बत की थी। अन्दरूनी हालत, मतलब रूही में अपने आप को लय अवस्था में करने की कोशिश नहीं की। अगर यह अब भी कर के देखें तो वो ही बात पैदा हो जायेगी। और घिसट चलेंगे। गुरु की ज़रूरत उस का नौकर भी पूरी कर सकता है मगर क्या उस को यह बात नसीब हो जाती है। हरगिज़ नहीं । उस का सिला टका होता है और इस क़िस्म की मुहब्बत वालों का तुम्हें मालूम है कि क्या सिला होता है। ऐंठ। और उस क़िस्म की मुहब्बत का सिला क्या होता है। कुछ नहीं। यह क्यों? इतनी बड़ी मुहब्बत का यह सिला! बात यह है - यह ही एक हालत है। जहाँ सिला है वहाँ मज़दूरी की क़द्र है। मतलब यह है कि वो ही चीज़ ज़िस को कुछ नहीं कहते हैं, माया से परे है।

और वाक़ई यह लफ़्ज़ मैं ने ठीक इस्तेमाल किया। इस लिये कि वो जहाँ का तहाँ रहता है। जहाँ के तहाँ से क्या मतलब? वो यह कि जहाँ से आया वहीं रहने लगता है। पहुँचा कहाँ? घर में! मिला क्या? कुछ नहीं।

भाई जान, यह बातें किस को समझाई जायें और कौन इन को समझेगा। गोहर की क़द्र बादशाह जानता है या जौहरी। हर लठ्ठमार शातिर नहीं हो जाता। न इतनी किसी को क़ाबलियत है कि इस हालत को समझ सके। फिर रोना क्यों? जब क़ाब्लियत ही नहीं। इस्तेदाद गायब, रहा क्या? वो ही लठ्ठमारी की बातें। पढ़े लिखों में ज़बानी जमा ख़र्च। बे-पढ़ों में तेज़ा ताज़ी। भाई जान, क्या ऐसी मिसालें मौजूद नहीं हैं कि पढ़े लिखे लोग ऐसा जमा ख़र्च मिलायें जिस को वो ख़ुद न समझ सकें।

हाँ, हैं। कौन हैं? इजाज़त याफ़्ता पुराने type के। नये सिलसिले के हैं, वो इस में चूर हैं कि छह सौ मुरीद बने।

(नक़्शा कैफ़ियत मौजूदा हालत सतसंग जिस को दूर करना है।)

स्टेशन पर जहाँ पहुँचें ख़ूब धूम धाम हो, मालूम हो कि शेरा आ रहा है। धौंस भी इस हद तक कि जिस हद तक नहीं होना चाहिये। अब सतसंग स्टेशन (जाये क़याम) पर पहुँच कर शुरू होता है। फ़रमाते हैं। हमारे हज़रत क़िब्ला बहुत पहुँचे हुये बुज़ुर्ग थे। आप की समाधि फतेहगढ़ में है। आप ने अपने बुज़ुर्ग से वो मुहब्बत की, कि जिस का अब पता कहाँ। आप ने वो कारे नुमायाँ किये हैं कि देखने के लिये आँखें चाहियें। एक मर्तबा वो एक बुज़ुर्ग से मिले,

उस ने आप की अज़्मत की और कहा कि मुन्शीजी यह बात मुझे क्यों नसीब नहीं होती। आप ने तकल्लुफ़ से फ़रमाया कि यह पीर की ख़ूबी है। वो जैसा चाहता है उस को वैसा बनाता है। ख़ुश करने के लिये उस के, दिल चाहिये। जिस तरह से ख़ुश हो सके उस को ख़ुश रखना चाहिये। बस यह ही एक बात है। जो रुहानियत के लिये मुफ़ीद है, बाक़ी सब जमा ख़र्च। मैं ने भी यह ही किया है कि जहाँ तक हज़रत को ख़ुश रख सका और यह उन्हीं की बरकत है जो इस ग़ुलाम को यह बात नसीब हुई। भाईयो! यह ही एक चीज़ है, इस को जाने मत देना। यही ही काम आवेगी और यह बातें आख़री वक़्त फ़ायदा रसा होंगी। क्यों कि जब तक पीर मौत के वक़्त धक्का नहीं लगाता, भवसागर से पार नहीं होता। लोगों ने यह वाअज़ सुना, चुनाँचे ख़ुश करने की तरकीबें तलाश करने लगे। कोई धोती ले कर झपटा, किसी ने चुपके से जेब में रक़म डाल दी। रक़म पहुँचते ही हँस दिये। शागिर्द ने समझ लिया कि बस इन के ख़ुश करने का यही तरीक़ा है। फिर क्या है। नज़रें आने लगीं। पीर ख़ुश किये जाने लगे। तोहफ़े तहायफ़ पेश होने लगे। पकवान आने लगे। गुरु की ज़रूरतें पूरी होने लगीं।

शागिर्दों ने एक मस्ला तो बाआसानी हल कर लिया, और बड़ी सहल तरकीब ख़ुश करने की मिल गई। ग़रज़े कि आओ और लाओ का मज़मून होने लगा। शागिर्दों ने इस से ज़्यादा और क़दम बढ़ाया। लगे अपने गुरु की तारीफ़ करने, जैसे उन्होंने अपने गुरु की तारीफ़ की थी। हाँ, पहले वाअज़ की उन्हें याद ज़रूर रही और जिस से कहा, यही कहा, क्यों कि यह बात आसान भी है। दस बीस रुपये से किसी की मदद कर देना अफ्सरों का बायें हाथ का खेल है। और बाज़ों को

इतनी मदद करना भी मुश्किल। मगर जब उन्हें भी करना पड़ी तो उन्होंने समझ लिया कि लड़के की बीमारी के सिलसिले में डाक्टर ले गया। अब मज्मा जमा। भाई देखना तो हमारी list में कितने आदमी हैं। मालूम हुआ और कुछ रक़म से अन्दाज़ा लगाया कि अभी इतने नहीं हुये जो मेरी ज़ाती इग़राज़ को पूरा कर सकें। अब क्या है, गुरु भी रुहानियत भूल गये। बस इसी की फ़िक्र रह गई। चेलों ने तो गुरु के ख़ुश करने का वाअज़ ही सुना था, चुनाँचे वो कारबन्द रहे। अब क्या फ़िक्र पैदा हुई कि हमारे चेले तो हमें ख़ुश करते हैं, अब हमें उन को ख़ुश करना चाहिये। ऐसा न हो कि यह लोग कहीं भाग जायें जो हाँडी बेनमक रह जाये। यह सतसंग का हाल है। सुना देना। क़सम खा कर कहें, वो ही आपके दोस्त, क्या उन का यह हाल नहीं है।

ख़ुदाया, हमारी औलाद में यह बातें कभी न पैदा हों। अगर हो गईं हों तो धुल जायें।

तुम्हें मालूम है कि मेरी औलाद कौन है। हर शख़्स मेरी औलाद नहीं रहा। अब तो वो ही हैं जिन्होंने मुझे अपने में मान लिया और मुल्तजी फ़ैज़ उसी से हुये जिस से मेरी मन्शा है, या यूँ कहो जिसे मैं चाहता हूँ।

लोगों ने जाने कितनी मुसीबतें इस बात के लिये उठाईं कि फ़लाँ शख़्स या अफ़्सर मुझ से ख़ुश रहे। और तरह-तरह की तरकीबें की हैं। हत्ताकि यह बात पता लगाई गई कि फ़लाँ शख़्स या फ़लाँ आफ़िसर किस से ख़ुश है और किस से मुहब्बत करता है। और चारो नाचार उसी से जिस से उस आफ़िसर या शख़्स को मुहब्बत थी,

मुहब्बत करना ख़ुद शुरु कर दिया और अपनी ख़िदमात से यह साबित कर दिया कि मुझे इस दुनियाँ में आप से मुहब्बत है। नतीजा क्या हुवा कि उस के दिल में गुन्जाइश पैदा हो गई। हत्ताकि उस आफ़िसर या शख़्स से कहने पर (या सिफ़ारिश करने से) उस का काम बन गया। यह ही हाल अगर आप लोग अपने यहाँ के समझने लगें, गो यह बात दूसरी है, तो क्या मेरी रहमत उस पर नाज़िल होना शुरु न हो जाये। मगर ऐसी समझ किस को है?

S.V. : This is the present day idea of Gurudom, which my Lord, gave in the sketch and it will be quite appropriate to the Doctor (Dr. Sri Krishan) and his right hand although he differs him for the most part in certain respects. I want, after he (M.M.) returns from tour, this copy should be corrected and circulated in your circle. It will be proper if the Secretary may kindly issue the copy to each of the member of the Mission. Corrections will be made and some words deleted. I will give notes on it.

18-XII-45

S.V.: We are striving after happiness, hopping like ducks, jumping like wolves. What for? HAPPINESS! Where is it; whether in the doctor's heart or his patient or in drugs? What drugs you mean? If drugs and drugs - it is cheap to get it. Why so? Because a few pice in the past days and a few rupees in the present days; now money is happiness, easily bought and easily achieved (relieved). How long would it remain? As long as the drug is in circulation. What will then happen if the

action ceases? No happiness but the longing. Where is it gone? With the drug or with the money. No doubt, money was the chief thing to administer Happiness but for the time being. Chloroform was the best medicine because in some form senses begin to cease to function. What also do you want? Whether Happiness through chloroform or with drugs? I think generally the people want to welcome Happiness either of these things. It is monetary. What that Happiness is, you seek for? Nothing but the idea of the Happiness totally gone. What is that stage? The state of perfection. When does it come? When a man sums him up in ONE. In ONE that ONE disappears.

Everybody is hunting for Happiness and searching beyond the limits of his own. He is gazing and thinking in the things beyond. He then begins to consider the things looking beautiful and thus making marks in his heart. The effect of which created in his talent becomes deeprooted in his heart and brain. He then begins to weave net for himself. The ideas going on before the limit become a way unlimited in his own heart, and the same becomes the object of thinking and pondering. The network framed by him, entangles him altogether, thinking nothing but the ideas he has attracted. They began to live in his own thought and wrap him up like the parasite in the big tree making the bush around. Now it is nothing but the things blocking up.

हज़रत क़िब्ला:- बाज़ार हम गये थे, एक चोट मोल लाये।

S.V.: These things carry him away against the seedlings and the one prey to it becomes used and habituated to these things. We sought for our Happiness and reached backward. The subjects of Happiness are gone now and one becomes entrapped in one's own ideas thoroughly. To get rid of which is the difficult task. Such is the condition in general.

हज़रत क़िब्लाः फिर लोग शिकायत करते हैं कि ख़यालात बहुत आते हैं।

S.V.: Whether they come to you or not, they created the world of their own play in it to die. Oh! a sorrowful tale of human life.

हज़रत क़िब्लाः-इसकी कापी भी मेरे उस मज़मून के साथ लगेगी।

मदन मोहन लालः मैं ने इरादा कर लिया कि जिन लोगों से तुम्हारी मुलाक़ात होगी, उन के लिये बस वो ही मौक़ा होगा। जांच के लिये वो हाज़िर हो सकते हैं, मगर सोचने के लिये अब वक़्त नहीं दिया जा सकता है।

सेवती प्रशाद कुछ अच्छी समझ का आदमी नहीं है। उसे तो फ़क़त भन्डारे में खाना तक़सीम करने की ग़रज़ है। और यह कि उर्स में हो आये। उस को ठस पीने की वजह से अभी मज़ा भी नहीं आया और दीगर लोग मसलन् **फ़तेह लाल** ने सीधी तबियत पाई है, शर व फ़िसाद से ग़रज़ नहीं है। इन पर जल्द कोई step लेना ज़ुल्म की हद तक पहुँचेगा। और जो लोग हों उन से भी मिलें और यह ज़रूर कह दें कि जाँच कर लीजिये। जाँच में भी एक बात है। अगर असल हालत से तवज्जो दी जायेगी तो उन को मालूम ही क्यों होने लगा।

यह बात तो सोहबत शनास ही समझ सकते हैं। इसलिये यह बेहतर है कि चन्द यौम तक सतसंग में रहें। अलबत्ता अगर डाक्टर (एटा वाले) अगर ख़ुदनुमाई छोड़ दे तो समझ सकता है। **श्री कृष्ण** को तो उन के लिहाज़ (ख़याल) से सतसंग की ज़रूरत ही नहीं। उन से इतना कह देना कि वाक़ई उन्हें ज़रूरत नहीं, तो मुज़ायक़ा नहीं। मगर बिरादराना ताल्लुक़ रखना फ़र्ज़ ज़रूर है। मैं समझता हूँ कि यह भंडारे जो हाते हैं, उन की भी ज़रूरत क्या रह गई। इस लिये कि जब मीर मजलिस का यह हाल है तो उस के छोटे (यानी तालिबान) भी अगर यह ख़याल बांध लें तो कुछ मुज़ायक़ा नहीं और उन को उन से कहने का हक भी नहीं रहा। इसलिये बक़ौल उन के (**श्रीकृष्ण**) उन लोगों (यानी जो उन से तालीम पाते हैं) को **श्री कृष्ण** दुश्मन नज़र आयेंगे। जब फ़ायदे की शक्ल अख़्तयार करेंगे। यह बातें मैं ने इस लिये लिखा दीं कि पढ़ कर तैयार हो जायें और जहाँ पर जैसी ज़रूरत हो, कहें, सुनें।

एक ख़याल common हो रहा है जो गोशगुज़ार किये देता हूँ कि **मदन मोहन लाल** ने **रामचन्द्र** को उठा दिया । जवाब यह है कि तेरह साल से मैं ने (MM) क्यों नहीं उठाया और ऐसी बातें ज़ोरदार क्यों पैदा नहीं कीं। यह सब को इक़रार है कि **रामचन्द्र** की हालत अच्छी है। यह बात **श्री कृष्ण** भी जानते हैं। इस की अनुभव शक्ति के क़ायल हैं। ज़रा उन से यह तो पूछना कि जब यह **(RC)** **सिकन्दराबाद** गया था वहां दमज़दन में उन की हालत का इन्कशाफ़ करा दिया था। इसने उन से यह भी कहा था कि मेरा aim और मक़सद जो कुछ भी है वो यही है कि सोलहो आना फ़नाईयत नसीब

हो जाये और इसी का कोशाँ रहता हूँ। क्या वो कह सकते हैं कि इतना ऊँचा Ideal उन्होंने या किसी ने बांधा और इतना बेक़रार इस हालत पर पहुँचने के लिये कोई हुवा। हाय। अगर यह बेक़रारी कहीं और लोगों में पैदा हो जाती तो हस्तियां नज़र आ गईं होतीं। यह कोई मामूली बात नहीं है। कहना आसान है। ज़रा अब कर के तो देखें, गो वक़्त बहुत रायगाँ गया। **मदन मोहन लाल** के सवाल का जवाब यह है कि अगर यह कर के देखा तो लाज़मी तौर पर इधर घिसट आयेंगे।

19-XII-45

हज़रत क़िब्ला: डाक्टर बहुत पचकश आदमी है। चालाक भी, मक्कार भी। दूसरों को क़ाबू में लाने वाला। उनको चचा समझो। फ़र्क़ इतना है कि वहाँ पहलवानी और यहाँ बनियापन (Banyapan). दूकानदारी से मतलब। मिठास से मतलब। सौ कह जाओ, सुन लेंगे। कान खोल देना और जवाब ले लेना। वो क़सम खा कर कहें कि लोगों को धोखा नहीं दे रहे हैं। मैं समझता हूँ कि पुराने type के कन-फूँक्का गुरु की हैसियत लिये बैठे हैं। आक़बत और बिगाड़ ली और लोगों को धोखा दिया। इस गुनाह की तलाफ़ी? इस का कोई क़फ़ारा नहीं। ईमान लेने वाले की सज़ा होती है और ज़रूर होती है। इस से ज़्यादा गुनाह कबीरा भला क्या हो सकता है कि अपने आप को समझते हुये भी दूसरों को गर्वीदा करें और ऐसा साबित करें गोया सत्गुरु वक़्त यह ही हैं। अगर यह ही बातें क़ायम रहीं तो सोचो तो सही कितना नुक़सान दूसरों का कर रहे हैं। बेचारे ब्रह्म विद्या सीखने आ रहे हैं और फ़ायदा क्या हो रहा है। यह वो बतलायें। नाम

किस का बदनाम हो रहा है? मेरा! काम किस का हो रहा है? डाक्टर का! मैं तो अब इस नतीजे पर आया हूँ कि वाक़यात कुछ भी करा लें। यह दूसरी बात है या ज़माना ऐसा करने पर मजबूर कर दे, यह और सवाल है। तावक़्ते कि बेख़्वाहिश और लातमाअ न हो जावे या क़रीब-क़रीब ऐसा न हो जावे। वो भी rare cases में। तब तालीम का अख़्तियार देना चाहिये। एक आदमी बहुत कुछ कर सकता है, उस के लिये इतना काम ही नहीं। वो (डाक्टर एटा) तो इजाज़त को ऐसा दबोच कर बैठ गये गोया सब कुछ मिल गया। पीर भी बन गये और गुरु का नाम भी ज़िन्दा कर दिया और अपने आप भी फ़ायदे में रहे। इस से बेहतर क्या बात। सब अपने ही काम बने और यह उन के लिये काफ़ी था। अपनी ताज़ीम तो होने ही लगी, गुरुवाई चलने लगी। क़द्र फैलने लगी। लोग वाह-वाह करने लगे। जलसे को देख कर जी ख़ुश होने लगा। पब्लिक आने लगी। और भला इन को क्या चाहिये था। आये और ख़ूब काम किया और बाद को भी वबा फैला गये कि अपना नाम क़ायम कर गये। कितनी अच्छी बात है।

दुनियावी तालीम के लिये हज़ारों रुपये ख़र्च किये जाते हैं। गिरोहबन्दी के लिये कितनी ख़ूँरेज़ी होती हैं। ठकुरायत क़ायम रखने के लिये कितना ज़ुल्म किया जाता है। अपनी बड़ाई के लिये कितना ख़र्च होता है। अपना वक़ार क़ायम रखने के लिये कितनी बातें ऐसी की जाती हैं जो नाजायज़ हैं। कितनी दावतें दी जाती हैं। कितनों के पैर धोये जाते हैं। अब सोचो तो सही, कितना परिश्रम अपनी इज़्ज़त, अपनी आबरू बढ़ाने के लिये किया जाता है। कितना वक़्त सर्फ़ होता है और कितना रुपया। यह कितनी मुश्किल बात है कि इस तगापो में

एक बड़ा हिस्सा ज़िन्दगी का गुज़र जाता है और फिर भी अक्सर इतनी कामयाबी नहीं होती जितनी कि ख़याल था और उस में भी तरह-तरह के ख़तरे। तरह-तरह के ज़रर। तरह-तरह की मुसीबतें। इस से तो यह ही बेहतर है कि गुराई ऐसे तरीक़े में शुरु कर दे जैसा कि आज कल लोग करते हैं। किसी ने कान फूँक दिया, किसी ने हाथ पर हाथ मारा।

भाई जान, इस से कुछ ताल्लुक नहीं कि उस का connection भी दुरस्त हुवा या अपने आप में ऐसा करने की क़ाबलियत है या नहीं। मतलब से मतलब। गुराई से ग़रज़, हल्वे-माँडे से काम। अपनी ज़रूरियात की फ़िक्र। यह तो बहुत सहल ही में गुरु बन गये और हर ज़रर से बच भी गये। भाई, यह तो बड़ा अच्छा मामला (नुस्ख़ा) है। मैं तो समझता हूँ यह सब को करना चाहिये। मगर क्या आक़बत बख़्श दी गई। हरगिज़ नहीं। क़ाअर तैयार है। सब से पहले ऐसा शख़्स जाने वाला होगा। ख़ुदा की रहमत उस पर कभी नाज़िल न होगी। (उस के) घर के लोग इस वादी में क़दम न रखेंगे और बहुत जल्द ज़िन्दगी में या उस के बाद, जब किसी से साब्क़ा पड़ गया तो इस को टायें-टायें फ़िश समझने लगेंगे। क्या ईशर के नाम पर ऐसे लोगों ने धोखा नहीं दिया। क्या यह ऐसा धोखा है जो मुआफ़ किया जा सकता है। हरग़िज़ नहीं। होनी है। उजड़ना है और दूसरे मायनों में अपने आप को राहज़न के सुपुर्द करना है। आक़बत कैसी, जब उस की शुरुआत ही ख़राब। रुहानियत कैसी, जब शुरु ही में अपने काम के लिये तमाअ दामनगीर। क्या यह लोग सच्चे मायनों में कह सकते हैं कि उन्होंने मेरा आसरा लिया? अगर ऐसा था तो यह

बातें कभी न होतीं। क्या यह शराफ़त नहीं है कि अपनी कमज़ोरियों को किसी ऐसे शख़्स के सामने रख दें जिस को दूर करने की क़ुदरत हो। ऐसा क्यों नहीं करते? शर्म व हया की वजह से। ऐसा न हो कि हमारा नुक़्स ऐसे शख़्स के समझ में आजावे तो हमारी भद हो जाये। और शागिरदों का दिमाग़ तो पहले ही से बन्द कर रखा है कि गुरु से आगे कुछ सोचें ही ना। और जब सोचेंगे नहीं तो समझ में क्यों आने लगा। क्या अच्छा हाल है। ख़ुदा बचाये। यह मज़मून मेरा उस मज़मून के साथ ही साथ connect होगा, फ़क़त नाम ऐसे शख़्सों के उड़ा दिये जावेंगे। आहा हा! क्या अच्छा मज़मून! अब हम को तो इस की नक़ल करना चाहिये। इस से दुनियादारी तो मिलती ही है। आख़िर कौन देखता है। यह तो ख़ुदा ही को मालूम होती है। अब तो भाई हम ईशर की तरफ़ से, नाम रहे, इसी को करेंगे। एक चीज़ तो संभल ही जायेगी और दूसरी से हमें ग़रज क्या। उस के तो मालिक गुरु महाराज हैं, वो सब ठीक करलेंगे। भाईयो, यह बात मैं ने बहुत अच्छी कही है। अगर मैं इस क़ाबिल होता तो भला गुरु क्यों करता। कुछ उन की भी तो ज़िम्मेवारी है या सब हमीं करेंगे। आख़िरत के ठेकेदार तो वो हैं। हमें इस से मतलब क्या, वो करें या न करें, यह उन का फ़ेल है। बहरहाल वो करेंगे ही। यह तो मुझे यक़ीन है, इस लिये कि इस के ज़िम्मेदार तो वो हैं। अगर न किया तो क्या उन से जवाब न लिया जायेगा। ज़रूर। वो भी इस से बच नहीं सकते, अगर हम इस से नहीं बच सकते। ख़ुदा तो दोनों का है। फिर कैसे हो सकता है कि इन्साफ़ न करे। और एक दूसरे से उस की duties का जवाब न ले। अगर यह नहीं करता तो मुझे तो भाई उस की हस्ती में भी अब

शक हो गया। क्या ऐसी उम्मीद है कि वो अपनी duties से क़ासिर रहे। अरे यह तो रोज़ की बातें हैं। मिसाल = एक मर्तबा मैं कचहरी से आ रहा था। दो गधे आपस में लड़ते हुये पीछे से आये। मैं चूंकि मराक़बे में था, अल्लाह मियाँ को यह फ़िक्र पैदा हुई कि ऐसा न हो कि यह दब जाये और फिर मेरा कोई बन्दगी करने वाला न रहे। पस क्या था, एक फ़रिश्ते को हुक्म दिया कि फ़ौरन् इन दो गधों को अलेहदा कर दो। ऐसा न हो यह शख़्स ज़ख़मी हो जाये। फ़ौरन तामील हुक्म की गई और गधों को अलेहदा कर दिया गया। एक मिसाल तो मैं यह ही पेश करता हूँ और जाने कितनी बातें गुज़री होंगी। कहाँ तक कहूँ। आख़िर को यह यक़ीन हो गया कि ख़ुदा मदद् करता है और ज़ाहिर है कि जब गधों के अलेहदा करने में उस ने मदद की तो एक इन्सान की मदद नहीं करेगा। और फिर ऐसा इन्सान जो गुरु के हाथ पर तबली ठोंक चुका है और हाथ पर हाथ रख चुका है और अपनी ज़ुम्मेवारी दे चुका है। क्या यह बातें पाये सबूत पर नहीं पहुँचतीं । क्या हाथ पकड़ना कोई मज़ाक़ है। उम्र भर निभाना होता है और फिर गुरु जो हाथ पकड़े उस को तो उम्र के बाद भी निभाना होगा। इसलिये कि वो तो गुरु हैं। भव सागर पार उतारने वाले हैं। कोई मज़ाक़ थोड़ा ही है जो इस से निकल जायें। वो तो हमारे हो चुके और इस की क़ीमत भी पा चुके। इसलिये कि बैअत होते वक़्त मैं ने नज़र भी तो दी थी। अब भला सोचो तो सही कि गुरु ने टका भी पाया, सुपुर्दगी भी ली, और हाथ भी पकड़ा, फिर कैसे ख़याल पैदा न हो कि हमारी यह मदद नहीं करेंगे। हमें अब क्या चाहिये, इस से ज़्यादा सस्ता गुरु भला किसी को मिल सकता है। हरग़िज़ नहीं। अब क्या है भाई, इस क़ाबिल बनो कि

यह ही तरीक़ा अख़्तियार कर सको, जो मैं ने अपने पीर के साथ किया था। इससे दुनिया और आख़िरत दोनों संभल जाती हैं और करने को तो कुछ बाक़ी नहीं रह जाता। इसलिये कि गुरु करने पर भी कुछ करने को पड़ा तो फिर भला ऐसे क़ाबिल गुरु करने से क्या फ़ायदा। हम जिसे चाहते उस से गुरु दीक्षा ले लेते। ज़्यादा से ज़्यादा साल में एक जोड़ा धोती का ख़र्च और बढ़ जाता। इस की भी फ़िक्र हो जाती। हाँ, उस में एक बात ज़रूर थी कि अगर वो रोज़ हमारे यहाँ धरे रहते तो अलबत्ता कुछ नुक़सान था। मगर जब हमें यह मालूम हो जाता कि यह ऐसे गुरु हैं तो हम उसी को क्यों न करते जिस के 365 चेले होते और हर रोज़ एक के यहां जा सकता था। अब यह सब, यार, उन्हीं के ज़िम्मे है, इस लिये कि मैं ने तो अपनी पोज़ीशन clear कर दी और वजह भी बता दी कि मैं ने उन को इस लिये गुरु किया। वरना क्या गुरुओं की कमी है, जिसे चाहे अपना गुरु बना ले। अगर आक़्बत बख़्शाने का ख़याल न होता तो क्या यह ही गुरु रह गये थे और जब ऐसा हो गया तो कोई वजह नहीं कि आक़्बत मेरे हिस्से में न आगई हो। और जब ऐसा है तो कोई वजह मालूम नहीं होती कि मैं दुनिया में नाम क्यों न पैदा करूँ। क्यों जी, जिस की आख़िरत reserved हो चुकी हो फिर उसे क्या खटका। अरे, खटका तो उसे होना चाहिये जिस के गुरु में यह ताक़त न हो और कहा तो ऐसा है, कि *"बिला भक्ति तारो तो तारिबो कहाओ (तिहारो) है"।* मैं तो उन से मुहब्बत भी करता हूँ । ज़रा कोई उन के लिये अलिफ़ से बे कह कर तो देखे, फ़ौरन् लट्ठ खोपड़ी पर होता है। भला इस से ज़्यादा और मुहब्बत की क्या मिसाल हो सकती है कि सुनते ही लट्ठ खोपड़ी पर।

और मैं समझता हूँ कि गुरु के लिये भी इस से अच्छा मुहब्बत का नमूना नहीं मिल सकता। चाहिये क्या था कि अपने आप को ऐसा फ़ना कर देते कि पता भी न रहता। अपनी ख़बर ख़ुद को न आती। यह जान निसारी थी और वो मुहब्बत। हुआ क्या कि ऐसी जाँनिसारी अख़्तियार की कि जाँनिसार ही हो कर रह गये। और ख़ूब हुये। इतने हुये कि होते ही चले गये। नतीजा क्या निकला। तुम्हीं बताओ तो सही कि जान ही रह गई और निसार ग़ायब। मतलब क्या। ख़ुदी रह गई और ख़ुद ग़ायब। और ख़ुद ही ग़ायब नहीं सब कुछ ग़ायब कर दिया। सीखा सिखाया भी गया। और आने की तो ज़रूरत ही क्या थी। जब जो था उस को भी न रख सके। फिर क्या था। और कुछ नहीं बजुज़ दुनियादारी।

अब ख़ुद फ़रामोशी का हाल सुनो। मायनी तो मालूम ही होंगे, यानी ख़ुद को भूल जाना। बस गुरु ही गुरु याद रहना। इस को नन्हे ने ख़ूब समझाया है। और वाक़ई यह मसला उन्हों ने ही हल किया और कर के दिखा दिया। कैसे किया। हर काम जो करो, गुरु से निस्बत दो। क्या और निस्बत दी। हुआ क्या, लगे वाअज़ कहने। और लगे गुरु के नाम पर काम करने। कहो, क्या यह मसला हल नहीं हो गया। अब जो काम करते हैं, गुरु का समझ लेते हैं। मगर रुपया आता है तो अपना समझते हैं। और इस से उन को वास्ता ही क्या। पहली मुलाक़ात में जो दे दिया वो बहुत है। उन्हें इस से ज़्यादा की ज़रूरत भी नहीं। ख़ैर कुछ हुवा तो, और सब कुछ हुआ। मेरा काम भी हुआ और तुम्हारा काम भी। और ख़ुदफ़रामोशी का मसला भी निभा दिया गया। अब क्या रहा। अब बताईये मुझ में रुहानियत में

क्या कमी है। कौन सी ऐसी बात है जो गुरु महाराज के नाम पर नहीं करता और नहीं की।

ऐसे लोग तुम्हें पसन्द हैं? हमारी समझ से तो बड़े अच्छे हैं। दुनिया यह ही बातें तो देखती है और इसी से रुहानियत का अन्दाज़ा लगाती है। फिर जितनी ज़्यादा जिस में यह बात है उतनी ही ज़्यादा दुनिया की निगाह में उस में रुहानियत । फिर भला ख़श्क हड्डियों को कोई क्यों पूछने लगा, जहां कुछ है ही नहीं। नहीं। है और सब कुछ है। यह ही एक चीज़ है। क्या अच्छा होता अगर ऐसा करते हुये चलते। मनज़िल आसान होती और मक़सदे ज़िन्दगी हल हो जाता। रुहानियत का मज़ा आ चुकता। मुश्किलें हल हो चुकी होतीं। विसाल हो गया होता। तड़प का ख़ात्मा हो चुकता। इश्क़ की मन्ज़िल तय हो चुकी होती। काम बन चुका होता। ग़र्ज़ेकि क्या-क्या कहूं। सब कुछ हो गया होता।

कौन मर्दे मैदान है, इस वादी-ए-पुरअमन और ख़श्क घाटी में क़दम रखे और बेलुत्फ़ हो कर दोनों हाथों से मज़ा लूटे। ऐसा मर्दे-मैदान आली हिम्मत कोई एक होता है और उसी के तुफ़ैल में सब का बेड़ा पार लग जाता है। आमीन ।

S.V. : My Lord is giving dictation for the last two days in humorous language, but best its own form. This is a new way of teaching. The idea of Gurudom in its corrupt form is best to understand and to save oneself by these things given in the notes. My story is different from that of yours, they are playing in times - educational minds are at work following

certain principles worth having for a society. The result is almost the same, though not in corrupt form.

Culture is required everywhere. These things are wanting in both the Sansthas (संस्थायें) Your society has been spoiled by so many different views without a proper lead to control them. My society has been spoiled for want of spiritual men. All the other spiritual ones have gone down not because of their own merits but for want of capable hands. Now all are merged in one. This is the result of our sorrowful tales. Your Guru excels in sacrifice. Nature is helping Him. The result is before your eyes. What moral inference you draw from these facts.

Labour and sacrifice don't go in waste.

22-XII-45

S.V.: Heaps of bones. My dictation somewhere is the result.

हज़रत क़िब्लाः- कोई मज़ाक नहीं कि मुझ पर लोग ज़िम्मेवारी छोड़ दें। यह ख़ता **रामचन्द्र** की है कि मुझ को तेज नहीं होने दिया। ढ़ेर हो चुका होता। अगर यह अपनी तबियत सख़्त बना लेता। भाई **मदन मोहन** मैं क्या करूँ। अगर तुम्हारी यह हालत होती जो मेरी है। और इस तरीक़े से जैसा कि मैं **रामचन्द्र** में फ़ना हूँ, किसी में हो जाते तो मैं देखता कि उस की रज़ा के ख़िलाफ़ कैसे जाते। बाल-बाल, हर रग व रेशा, हर मसाम में, मोजूद हूँ। ऐसी फ़नाईयत आज तक किसी ने नहीं की। तरकीब बस यह ही हो सकती है कि इस को भड़का दिया जाये

और यह उस वक़्त मुमकिन है जब कि दूबदू गुफ़्तगू हो और कोई बातें ऐसी पड़ जायें कि इस को तैश आजाये। इस मामले में डाक्टर ज़्यादा (तैश लाने में) कामयाब हो सकते हैं। क्यों कि यह बात cutting remarks से ज़्यादा पैदा हो सकती है, और उन में यह आदत मौजूद है। लिहाज़ा उस को सब से ज़्यादा नुक़सान पहुंच सकता है। इस वक़्त का नोट सब से क़ीमती है, नोट बुक में दर्ज होगा। जो नोट कि **मदन मोहन लाल** को मैं ने दिये हैं, उन के इक़्तबासात तारीख़वार दर्ज होंगे। बाक़ी का मए इस के एक पम्फ़लेट बनेगा। और जो गुफ़्तगू इन से (MM) होगी, तारीख़वार दर्ज की जावेगी। उन लोगों से कह दो कि यह आख़री मौक़ा है, इस के बाद तुम जानो। इस के बाद कोई किसी क़िस्म की तहरीक की आरज़ू न करें।

30-XII-45

S.V.: You are touring now at Orissa with stoppage at the stations. I want that work may also be started there. The best way is to start work by lecturing, for that you have not prepared anybody. Let **B. Ram Chandra II** study first, if available take him away to the places you are going. He will see the prominent persons, talk with them and represent the Mission, and arrange for his lecture. You will have to pass certain stages, necessary for the journey. I meant for **B. Ram Chandra (II)**. He should eat away the books as a preparation. A good worker is sitting before you **(R.P. Misra)**. Matchless. **Madan Mohan Lal**, no doubt, did a good work in his tour.

31-XII-45

S.V. : A special work from **Lord Krishna** is approaching you. Time is passing on and I am not getting my man equal to you. Tomorrow is 1st January, 1946. Mould yourself. You will start your work from the commencement of the new year. Office (officework) is a great drawback. Avail of the morning time. I have been telling you so long that (you) always abide by your will. A reward from **Lord Krishna** is coming for your intimate friend whom you solemnly love. I give **Rameshwar** one duty more than what he has. He should gather Dharmik Pustaks for you and a man who may read the books before you. Commentary on the Vedas, if written by any saint, may be sent for. **Lord Krishna** had given you the time for five years for services. My soul and my heart, nay the dearest soul of our Master and Lord pray to finish the work. My Lord, in a way, really speaking, has sold himself to you altogether. Re-action of बैअत. In reality you are in the position I do not want to express. What of me, I am going side by side with your Master.

हज़रत क़िब्ला : स्वामी जी ने वाक़ई ठीक कहा है। मैं ने अपने आप को वाक़ई गिर्वी कर दिया। यह मिसाल भी न मिलेगी। मेरी राय है कि अब तुम 10 जनवरी, 1946 ई० से time ले लो और यह वक़्त उस वक़्त रहेगा जब तक मैं न कह दूँ। मुमकिन है कि तीन माह तक रहे या इस से क़ब्ल ख़त्म हो जाये। इस से तुम्हारे दिल व दिमाग़ को बहुत फ़ायदा पहुँचेगा। इसलिये कि कोई ऐसा न होगा जो तुम को

disturb कर सके। भाई मन, मैं तुम को एक बात बतलाता हूँ। तुम्हारी सोहबत आबे-हयात है। मगर किस शख़्स के लिये; जो मुझ को तुम्हारी हस्ती में पैवस्त देखता है। मन्ज़िलें हर शख़्स तै कर सकता है और यह भी नहीं कि काम बना सके। हर शख़्स से मतलब मेरा अपने मुरीदों से है। यानी वो मुरीद जो मुझ में समा चुके हैं। कहो तो एक बात और कह दूं कि तुम्हारी सोहबत dangerous भी है। किस शख़्स के लिये? उस शख़्स के लिये जो मूझ को तुम में देखता हुआ फिर भी महकूम रखना चाहता है। मेरा यह मतलब नहीं कि लोग देखते ही नहीं या करते ही नहीं बल्कि एक आम बात कह दी। यह क़ाबिले तारीफ़ ज़रूर है कि तुम को इस से गिलान नहीं होता, मगर दिल व दिमाग़ पर असर ज़रूर पड़ता है। और इस से मुझ पर असर पड़ता है। मेरी हालत भी लगभग ऐसी ही हो जाती है। हां असर न पड़े अगर तुम ज़ब्त से काम न लो। भाई जान! मुकम्मिल फ़नाईयत पीर में ऐसा ही हुआ करता है। मेरा भी ज़िन्दगी में यह ही हाल था। यह बातें बहुत सबक़ देने वाली हैं। क्या कोई शख़्स अगर मेरी हालत को पहुंच जाये और अपने मुरीद में ऐसी फ़नाईयत करे जैसी मैं ने की है तो उस का भी यही हाल हो जायेगा। यह क़ुदरत है इस को कोई रोक नहीं सकता। एक बात और बताता हूं। अगर ऐसे मुरीद को ऐसा ही समझ लिया जाये, जैसा समझना चाहिये तो फ़ायदे भी बेशुमार हैं। तुम्हें मालूम है, मुझ में कोई कैफ़ियत नहीं। है क्या? वही जो तुम में है, और यह होता चला आया है। इस में कोई लिपटी बात नहीं। इतनी विशेषता ज़रूर है कि मैं ने ज़्यादातर और मुकम्मिल तुम में फ़नाईयत की है और ऐसी कि बायद व शायद। मुमकिन है कि

ऐसी मिसाल आगे न मिले और मिल भी जाये तो हुक्मे ख़ुदा समझना चाहिये। ख़ैर यह तो बात ख़त्म हो गई। अब दूसरी सुनो। क़ुदरत का काम इस वक़्त बिल्कुल तुम्हारे ऊपर छोड़ा गया है और कुलियतन् तुम्हीं करोगे। अब भी और ज़िन्दगी के बाद (भी)। इस काम में हम लोगों का क़तई हिस्सा नहीं। इस लिये भाई जल्द-जल्द ख़त्म करो। कामों का अभी इन्तज़ार हो रहा है और भाई तुम्हें बहुत करना है। **कहो तो सही क्या दुनिया ऐसी ही छोड़ कर जाओगे जैसी कि तुम्हारी पैदाइश के वक़्त थी और उस के बाद भी रही और अब भी है। नहीं, नहीं, ऐसा नहीं होगा। तुम कुल काम ख़त्म** कर के जाओगे और रुहानियत का चिराग ऐसा रख जाओगे कि ख़िज़ाँ की हवा उस को बुझा न सके। मुझ को भी किस कदर ख़ुशी होगी। मैं ही जानता हूँ और तुम्हारे लिये मैं क्या कहूँ। यह बात तुम्हे ज़िन्दगी के बाद मालूम होगी। क्या कोई समझ सकता है कि किसी शख़्स को अपने बुज़ुर्गों का साया नसीब हुआ हो। हरगिज़ नहीं। यह तुम्हारा ही हिस्सा है। ख़ुदा तुम को इस से भी ज़्यादा दे और मेरी यादगार हरदम ताज़ा रहे। अन्धों को अब भी नहीं सूझता। वजह क्या है? ख़ुदी लिये बैठे हैं। मौला बन गये हैं। यह बात नहीं कि उन को खटक न पैदा हो गई हो। बाज़ों को ख़ौफ भी ग़ालिब है। और कुछ लोगों को पूंजी की भी फ़िक्र है कि हाय ऐसा न हो कि यह चली जाये। मियां अपना काम करो, कहां की झंझट। फिर जो आजाये उसे देख लेना। इस बात में **रामेशर प्रशाद** से मुवाफ़क़्त करता हूं। जब तक ऊँट पहाड़ के दामन तक नहीं पहुंचता, अपने आप को बड़ा समझता है। यह dictation तुम्हारी कौन believe करे जब कि किसी की ऐसी हालत ही नहीं

हुई। हो जाती, मगर दिल देने का सवाल था।

S .V.: Two hours' work in the night will finish the programme of work allotted to you.

2-1-46

हज़रत क़िब्ला : बदरियाफ़्त **रामेशर प्रशाद** फ़रमाया : **नन्हे** उस जन्म में कोढ़ी की औलाद थे। बाल बच्चे बहुत थे। आख़िर में इन का गंगा किनारे रहना हुआ । इसलिये कि पिद्री वबा इन में आचुकी थी। राम् राम से काम था। जो दे दिया जाता था, खा लेते थे। बस इतना हिस्सा उन के संस्कार बनाने में मदद्गार हुआ। जो कुछ बना पा लिया।

S.V.: He was born in Kayastha family. He had a good deal of pleasure in his lifetime. The epidemic caused by his ancestor led him to the Ganges' bank. Syphilitic he was. In a way he has renounced all at once, the worldly things, not on account of his love to (for) God, but on account of his disease.

हज़रत क़िब्ला: भाई, मेरी क्या पूछते हो। मैं उस जन्म में भी ग़रीब था, और इस में भी ऐसा रहा। ज़िन्दगी मेरी ज़रूर pious रही और जो कुछ मिल गया, ईश्वर का शुक्रिया अदा किया। और बच्चों की परवरिश की। गाढ़ी कमाई से हमेशा पेट पाला। दुनिया से लगाव न रहा। न मुहब्बत इस हद तक थी कि बच्चों और बीवी के दामे-उल्फ़त में गिरफ़्तार रहता। ग़र्ज़ेकि उस की याद से ग़ाफ़िल न रहता था। ऐसी

हालत में रहते रहते मेरी हालते एत्दाल क़ायम हो गई। जगत पसारा झूटा मालूम होने लगा। प्रेम (ईशरी) उमंड़ने लगा। दुःख की बरदाश्त होने लगी। दुनिया नापायदार मालूम होने लगी। यह हाल पिछले जन्म का जिस्म छोड़ने से बहुत पहले का है। आख़िर उम्र में एक हालत ऐसी क़ायम हो गई थी जिस को मौजूदा सूरत में त्याग की हालत कह सकते हैं। द्वेष ख़त्म हो चुका था। याद बाक़ी थी। मेरी वस्ल जिस उम्र में अब हुआ है, इस से पहले हो चुका था। यानी जवानी ढ़लने के बाद, यानी मौजूदा जन्म से सात आठ साल कम। मैं पहले जन्म में ब्राह्मण का बालक था। पेशा कसनई था। पिछले जन्म में कोई गुरु न था। अगर गुरु होता तो दोबारा जन्म क्यों होता। एक बात क़हने से तो रह ही गई। कि जब ईशरी मुहब्बत की यह हालत थी तो दोबारा जन्म क्यों लेना पड़ा। बात यह थी कि मुझे उस की याद बाक़ी थी, जो आख़िर दम तक रही और उसी याद में जिस्म छोड़ा और वो ही याद मुझे मौजूदा सूरत (मौजूदा जन्म) में ले आई। और इस से आगे तरक़्क़ी की बुनियाद पड़ी। यह ही एक चीज़ थी जिसने मौजूदा शक्ल में ला कर खड़ा कर दिया, भटकने नहीं दिया। राहे रास्त पर ले आई। प्रेम की हालत आख़िर तक वैसी ही रही यानी बुढ़ापे तक। यह मुहब्बत आलमगीर हो चुकी थी और उस में equality थी। लगाव न था। यह बात सिर्फ़ पिछले जन्म में थी या यूं समझो कि जैसे ईश्वरी मुहब्बत यकसाँ रहती है।

S.V. The stage my Lord has undergone during his past life is not to be crossed by the majority. It is the result of his past life, you see just today.

बसवाल **रामेश्वर प्रशाद** कि ब्राह्मण से कायस्थ कुल में जन्म क्यों हुआ, क्यों कि ब्राह्मण कुल ऊँचा समझा जाता है?

हज़रत क़िब्लाः Culture (तरबियत) की ज़रूरत थी। ग़ुर्बत की हालत मेरी कई जन्म से ही रही।

हज़रत क़िब्लाः तुम्हारी (RC) मुहब्बत झुलस के रह गई थी। न यह ख़याल था कि किस से मुहब्बत कर रहे हो, न यह कि कोई तुम से भी कर रहा है। अस्ल पूछो तो यह point मुहब्बत का ख़ात्मा था जो तुम ने लिया। आग़ाज़े मुहब्बत अन्जामे मुहब्बत था। यह हालत किसी को इन्कशाफ़ न हुई। लोग इस की नक़्ल न करें वरना गुमराही का अन्देशा है।

S.V.: The godly work can only be given to such pesons, I mean the work you are doing. The condition is very rare. Nobody can boast of such things, but yourself. It is the special making of my Lord, the Master. He has given the whole life for such making.

3-1-1946

S.V.: Ram Chandra! Such brain! Do you know why these things do not enter in the brains of equal capacities. There are brains, I mean the human brains who have entered the spiritual life but they have got so many things to do in their ownself that they get a little time to feel the actual wave of spirituality. They do what they are not required to do (Good heavens! you have shouldered my work and I am free to

dictate). The result is that they (human brains) began to peep in their own affairs and are absorbed wholly in it. The power given to them increases at one place and the power created by their ownselves also, increases towards the other point. The outcome of which that they cannot make both the links together to go all at once in the same channel. The thing is very difficult no boubt and beyond the reach of majority, but this does not mean that we should not attempt it. In other words, if you give the prominent place to it and try to absorb wholly towards the wave, the things coming on the other side will go into it absolutely in the long run.

हज़रत क़िब्लाः रामेश्वर मैं इस के दिमाग़ की कहां तक तरीफ़ करूँ, सब से पहले Good Heavens वाला जुम्ला मुलाहिज़ा हो। कितना **आसान तरीक़ा भीड़ में तवज्जह** देने का ईजाद हुआ है। कुल के दिमाग़ मिस्ल रस्सियों के खींच कर एक जगह पर क़ायम कर दिये जायें और उस में will बांध कर तवज्जह दी जाये तो अकसर लोगों के दिमाग़ मौत्तल नज़र आवेंगे और असर से, नामुमकिन है कि कोई बच सके। जितनी जेज़ (लतीफ़) तवज्जह यक्सूई के साथ point बना कर दी जायेगी, उतना ही तेज़ असर होगा। यह तरीक़े का पहला हिस्सा है। अब दूसरा हिस्सा शुरू होता है। सुनो, यह दिमाग़ जो रस्सियों की तरह से खींच कर यकजा क़ायम किये गये हैं, उन का connection अगर ऊपर से कर दिया जावे तो सूक्ष्म असर जम्मे ग़फ़ैर के ख़यालात पर पड़ेगा और इस धार को अगर इस से ऊपर वाली धार से connect कर दिया जावे और उस का connection ज़ात में गुम कर दिया जावे और वहां से ताक़त रुजूअ की जावे तो

अगर तवज्जह देने वाले को command हासिल है तो दिमाग फट जाने का अन्देशा है। अगर मौक़ा पड़ जाये तो जिस शख़्स को ईश्वर ने यह ताक़त अता की है वो अपनी पूरी हालत और will से रुजूह न होवे। ज़रूरत भर (या पर) काम लिया जा सकता है। यह करिश्में हैं मगर उस्तादाना। इन के देखने के लिये शायद किसी की निगाह वसीह हुई हो। यह एक ताक़त है जिस से दिमाग़ पर असर पड़ता है। इस का रूप रूहानी हो जायेगा। भाई जान, सवाल पूछो और हल करो। यह वक़्त बार-बार नहीं आयेगा।

S.V.: I liked your method very much on the other day and at times you have done it. This is a good method to relieve me of the work but this must not be done repeatedly. Higher souls, you know, are very busy. You do not know of the work you are doing here, vide our Notes dated before Bhandara, in March last probably. There are ways how to relieve for sometime the liberated souls and that is only possible in human body. You know the method.

7-1-46

मुतल्लिक़ा हालात डेपुटेशन एटा वगैराः

हज़रत क़िब्लाः मैं ने सब बातों पर ग़ौर कर लिया।

हज़रत क़िब्ला मौलाना साहब अलैह उल रहमतः मैं ज़ात से निकल कर आया हूं। तुम्हारे गुरु महाराज मौजूद हैं। हालात सब मालूम हो गये। जिस शख़्स को अपने ईमान की परवाह नहीं, उस का इलाज तबाही के सिवा और कुछ नहीं हो सकता। मैं ने बाग डोर

खींच ली और यह हुक्मे ख़ुदा था। इस का इल्म, **श्री कृष्ण** की क्या हस्ती है, बड़े-बड़ों को आज तक नहीं हुआ। चन्द ख़ास-ख़ास जानते हैं। और वो हिन्दु बुज़ुर्ग हैं। इस का गुल ऐसा खिलेगा कि आख़िर को हक़ीक़त सब को रोशन हो जायेगी। तादाद थोड़ी मगर अच्छी, बहुत काम कर सकती है। **श्री कृष्ण** में यह क़ाबलियत ही नहीं कि अनुभव को समझ सकें। उन को कोई बुज़ुर्ग ही नहीं मिला जो तस्दीक़ कर सकता। इन लोगों का ख़याल क़तअन् छोड़ो। समझ लो कि ग़ैर हैं। शैतानों की तादाद इस ज़माने में बढ़ रही है। रोशनी के साथ अन्धेरा भी रहता है। सलब करने का मसला जो challenge की शक्ल में आया है उस का जवाब यह है कि आंखों पर परदे पड़े हुये हैं। यह मसला मेरे ऊपर छोड़ दो। तुम (**मदन मोहन लाल**) ने इस लठमार गुफ़्तगू से क्या पता चलाया। (अर्ज़ करने पर फ़रमाया) अनुभव ठीक है। लोच ग़ायब है। भारीपन मौजूद है। इन्सान में ताक़त रखी गई है और यह (ताक़त) जैसी चाहे बढ़ाले। मगर ताक़त रुहानियत नहीं। उस के लिये तो यह है कि जब तक कि उस के क़वायद और पाबन्दियों पर न चलेगा, तरक़्क़ी नहीं हो सकती। यह ही हाल इन का समझो। जब रुहानियत ही नहीं, अनुभव कैसा और रोशनी कैसी। अनुभव की तारीफ़ **उमा शंकर**; जिन के लिये गुरु महाराज ने **महात्मा बुद्ध** के सुपुर्द किया (नोटः उमा शंकर ने **एटा** में कहा था कि मुझ को ख़्वाब में यह अनुभव हुआ कि गुरु महाराज ने मुझ को बुद्ध भगवान के सुपुर्द किया। इस ख़्वाब की बिना पर मैं बोद्ध धर्म में शामिल हो कर बैअत हो गया यानी initiate हो गया।) अपने काम में लग जाओ। ताल्लुक़ छोड़ दो। जो आ जाये अच्छा है। ज़माना ख़ुद

साबित कर देगा कि जो कुछ उन लोगों के मुरीदैन ने समझा, सुराब था। चिराग़ यही रहेगा, जो क़ायम किया गया है। यह ख़ुदाई हुक्म है। वक़्त आयेगा कि यहीं से रोशनी मिलेगी। सब माँद होंगे। अभी वक़्त गुज़रने तो दो। बुज़ुर्गों के क़िस्से सुने होंगे। औलिया और पैग़म्बर की कामयाबी उन की ज़िन्दगी में कैसी रही। मालूम होगा और बाद को क्या सूरत इख़्तियार हो गई। नबियों का हाल पढ़ा होगा। यह बातें होती ही चली आई हैं। ऊपर से Heap of bones का लफ़्ज़ आया। फ़रमाया: सही कहा है। भाई (RC) तुम्हें तो बहुत से झाड़ झंकाड़ साफ़ करना हैं। क्या क़ुदरत ने यह हालत दी तो कोई वजह ही तो है। सच तो यह है कि रख़ना अन्दाज़ियाँ जब तक नहीं होतीं, क़ुदरत के काम में तब तक बेहतरी की सूरत पैदा नहीं होती।

अगर तुम्हारा (RC) ऐलान ज़िन्दगी में कर दिया जाता; यह बातें ज़रूर होतीं और रुकावटें पड़तीं। बग़ैर इस के क़ुदरत का काम चलता ही नहीं। **मदन मोहन लाल** से कह दो कि काम ख़ूब किया। मैं ख़ुश हूं। बला से कोई आता है या नहीं। फ़र्ज़ पूरा कर दिया और कहने को भी हो गया, अगर वक़्त पड़ जाये।

रामेशर यह काम करेगा कि डाक्टर की जमायत अब नहीं है। मुन्तशर हो चुकी है। भला यह बातें अवाम होतीं तो एक ही शख़्स में यह ताक़त क्यों भरी जाती। हर शख़्स समझता होता तो यह नौबत क्यों होती। यहाँ रुहानियत से लोग साफ़ हो चुके हैं। और होता ऐसा ही। (नया) सिलसिला जब हुआ यह बातें अमल में आईं। ख़ातरन् मैं इतना रवा रखा है कि जनाब जी साहब यानी **मुन्शी पुत्तूलाल** (घरेलू नाम हज़रत क़िब्ला) इन बातों को बहुत ख़ास हालत में मुझ से .....

हज़रत क़िब्ला : क़िब्ला मौलाना साहब ने महरबानी की कि इजाज़त दे दी कि मैं उन से हमकलाम हो सकूं। बोझ हल्का हो गया। भाई ख़याल छोड़ो। काम में लगो। **मदन मोहन लाल**, अब तुम से कोई नहीं कह सकता कि तुम ने कोशिश नहीं की। वो लोग भी नहीं कह सकते। सबूत मौजूद है। अब तुम (RC) मुझे रोकना नहीं।

श्री कृष्ण को, अच्छा लिख ही लो, आक़ कर दिया। मैं कह भी चुका हूँ। मुमकिन है किसी ख़त में हो। मुझे दो शख़्सों (**चतुर्भुज** और **श्री कृष्ण**) के साथ ऐसा करना पड़ा और मैं सही था। मैं समझता था कि ऐसा करना पड़ेगा। मगर **रामचन्द्र** को उम्मीद ने बाज़ रखा। मैं ने भी इतने दिनों सब्र किया। मैं चाहता हूं कि जो कुछ आज लिखाया है, **मदन मोहन लाल** के हालाते-सफ़र में दर्ज कर दिया जाये। और यह पम्फ़लैट उन्हीं के नाम रहेगा।

8-1-1946

S.V.: I have heard the talk concluded last night in utter despair. What all I meant is that you have gone above in the condition of spirituality. The condition is of course rare but above humanity. It is only fit for godly purposes - not the present situation. You do not leave the habit and people are taking advantages for their own supremacy to run. I will have to take permission from your Master to pull you down for the work. You are totally unfit at the present stage. That is the only stage for the training of the others and godly work. The stage was quite fit in सतजुग (Sat Yug). You are doing the work haphazardly. The idea as your condition demands of least

trouble remains present in some form or other. That is the deep rooted idea having connection with the ज़ात (Zaat - Being). We can't go beyond it. We must abide by it. That is the difficulty in your way.

You prayed last night from (to) Lord Krishna He moved, but found Himself a bit powerless to do because your link of love is connected thoroughly with **the Centre** wishing everybody good luck; unless it is removed, work will suffer. In reality that is the order. I described just above, I mean the connection with Almighty in deep-rooted form.

(To MM). You will take it ill if I say that you don't display with your powers and godly works, you have ceased. Do your duty and leave the result on God. I wonder how you people think that your will power goes in waste. The result will come sooner or later. This is a general habit among you all, that you want the result of the work at once. When this does not happen you begin to cease it. You can't claim yourself better off than **Lord Krishna**. How much time He took in doing what He meant. He had Rajayee (रजाई) Power as well besides the spiritual one, and you have got but one, the spiritual one. **If work be done for work and for work only, then one must not be disappointed.**

Think, if you believe your Master or me, that you have got power--it cannot be seen by the eye. For examination, I tell you a method. **Bring out that power in the air and expand it and see that you have got the same in you.**

Disappointment is the poison and is itself a power which creates a hole or leakage in the work. Do and do. His Guru while in Etah was his right hand, and He would have done a lot, had he (MM) exercised his will to upset anybody.

There is time - do it now. **When anybody is on special duty, (he should) always think that he is surrounded by some great power.** (Remember the days of Southern India). Does he (MM) think that the work will suffer? I think he must not.

It is a rising out from the smaller channels now like the small electric wheel in the powerhouse. It is but in an infancy, no doubt. Let it grow old and time pass, the result will be in fully developed form - vivid to the eyes of the general public - long after the present सिलसिला (Silsila - chain) came into being. **Lord Krishna** was successful really after His lifetime. Everybody was a foe to Him, while living. I leave, of course, a few friends. The example given by **Madan Mohan**, this time, of **Shishu Pal** and **Bhim**, while **Lord Krishna** wasting his energy (due to his hurling of one hundred abuses on **Lord Krishna**) is quite a fit one in the present stage of your life. My Lord has waited for 13 years for this very reason, when you were born, their energies were quite exhausted. (Note by MM = Born से इशारा उस वक़्त या दिन से है जब बाबू **रामचन्द्र** जी साहब, शाहजहाँपुरी की सज्जादा नशीनी को गुरु महाराज ने ज़ाहिर किया, यानी आख़िर अप्रैल या शुरु मई 1944 ई०).

Strange! How all of you are going down when you have got a greater responsibility and the best Guru and guide. I was always roaming like a lion during my lifetime. The reason of course, was that I had no wife and no children and so no responsibility. and you all being a गृहस्त householder (have) sundry other works to do in the family; doing all that if you go greater to the cause of spirituality, you will be praised better than myself.

Take the example of **Rama**. He was all around with his enemies throughout his lifetime. He remained as a King of Ajudhia (Ayodhya); weeping sometimes for his wife in his last days. He was born in the highest Rajput clan. His pedigrees have always held with honour and veneration. That was the only thing in the eyes of the general public to worship him as their head. His life, of course, is full of duties he performed in his lifetime with his father, brother, cousin and others. Hero worship in India is the problem liked by all. He became the hero of his time. Not only that he was given the place of incarnation of deity; rightful as he was and really bestowed with that power an Avtar must have. This is a gist. I come now to the point. A greater regard was paid to him during and after his life, no doubt. But he got the proper place among Avataras after he had long gone from this world. Why so much dictation? To show that when a new thing comes into being, time is required for it to be completed. Nature's work is slow when something extraordinary happens. That push comes when you create a whirl for the

power to rush in. Have you created that whirl? I think not, nothing but complaining - we have no power. Is it the method? No. How can you create a whirl; I say again when there is a leakage in your brain, so to say? These things are annoying to me and everybody. Make use of your Power. I say this to all. Power is not a stone or a sword to be given in one's hand. It is a dormant thing and works so. Remember these things and waste no time. I have found a good number of persons in your Society always complaining some thing or the other.

Really they have no regard or faith in their Masters. It shows that their Masters are weak. When such is the case, how can they develop into one really suited to them. If I say the truth, none of you has got the capacity of keeping what had been given to them. The thing easily achieved, so no value. I quote the example of my Master, leaving the first chance, that what I had gained from him (was) not so easily as you people are getting. I have gone through a good deal of sacrifices. The world was nothing to me but a drop of snow sand. Who has sacrificed but your Master, who was really deserving. Why such evils among you? Want of service. Service - I mean like that of your Guru, is wanting. He never did any service to you in the capacity which the people are generally having. He never got the idea of greatness enter in His brain, which is really a sign of greatness. How many of you are doing that? Spirituality is spoiled and being spoiled in the name of the great Master, and everybody has the idea of greatness in some form or the other. Poisonous.

हज़रत क़िब्ला : इस लोच को कोई पहुँचा ही नहीं और न इस का कोई मतलब समझा।

S.V.: If greatness be taken off from one's mind- I mean those who are spiritually developed - duty remains.

Liberation: I tell you the way by which a man can judge himself whether he is proceeding towards liberation. I don't mean any other thing but the people should try for it.

Do you know what is God? He is not sitting on the throne. He has no ears and eyes like you. He has no hands and feet. But still the work is going on alright in the simplest way. You have got all these things said above, then how you can go to the place reserved for everybody in the end. Be like Him. I mean just like what I have said above. Having all these things, hands and feet, eyes and ears, go into that state which is surrounding you in the simplest form. If one acquires that in his lifetime, think that he is going to liberate himself. If you find this state anywhere in human body, think that he has liberated himself altogether or in toto. The people have gone through penances for a thousand years only to acquire it. How difficult it was and is today. I think you are cutting joke if you talk of liberation.

Liberation in body: is most difficult, and that is the advent of big liberation if one seeks to acquire it in the body.

Heaviness: should be washed away.

Activities should be made dull.

Live in a simple life.

Attachment: I mean the wrong one should be ceased. Copy it out from your Guru. Weigh the persons now and see who is going to liberate himself. A few you will find.

हज़रत क़िब्ला : मदन मोहन लाल, हमारे यहां यह मसला बड़ा आसान बना दिया गया। बस गुरु आख़िर में धक्का लगा देंगे। बेड़ा पार लग जावेगा। इस लिये बस गुरु कर लेना ही काफ़ी है। ग़रज उन की है कि वो आज़ाद करायें। न कि मेरी। अगर तुम्हारी बिरादरी बहुत बढ़ जाए, ख़ुदा न करे यह ख़याल जाँगुज़ीं हो, तो मैं समझता हूँ, यह ही हाल हो जाये जैसा कि मुसलमानों में है कि **हज़रत मोहम्मद साहब (सल०)** सब की सिफ़ारिश कर देंगे। बस कल्मा पढ़ लेना काफ़ी है। भाई जान! यह बात आसान नहीं। आसान ही हो जाती तो फिर क्या था। क्यों लोग गद्दी को लात मार कर सहरा नवर्दी करते। और ऐशोइशरत को ख़ैरबाद कहते। हाँ, इस लिहाज़ से अगर ख़याल रखा जाये कि गुरु की अज़्मत और बुज़ुर्गी मन्शा हो तो हर्ज नहीं। मैं ने जो ज़िन्दगी में न किया अब कर रहा हूँ। इस को करना ही समझो। कुछ राज़ खोल कर रख दिये, और रख दूँगा। कोई नहीं समझता। यह नई बात है। यह क्यों? हुक्म ऐसा ही है। अवाम के दिमाग़ इस के समझने के क़ाबिल नहीं रहे। कहने और करने में बड़ा फ़र्क़ है। यह एक हालत है जो वाक़ई तौर पर बहुत आख़िर में पुख़्ता होती है। **एत्क़ाद**, बता दूँ, वाक़ई क्या है? यह है कि अज़ ख़ुद रफ़्ता हो कर

अपना संबंध कुलियतन् ज़ात से पैदा कर ले। ऐसा कि हट न सके। ऐसी हालत अगर वाक़ई हो गई है तो नजात ज़रूरी और लाबुदी है। इस के नीचे जितनी कमी है, उतना ही कम फ़ायदा।

9-1-46

S.V.: All my night's discourse and the morning one must be retained in the memory. I see my Master's work suffering very much on account of you people, who are responsible heads. The present form of your satsang is a sorrowful tale for the Great Lord, unless a part of it is destructed, the work of Nature will not run smoothly, and I repeatedly said that such time will not come again in future. **Ram Chandra**, I assure you that you are free from all such things which the people call सवाब and अज़ाब. What you do is the Nature's demand. Nature is leading you towards the destruction to be made soon. The world which you see today is not to remain so in future. World's Organization is your duty. You have responsibility ahead. We can only help you in this matter, but the work is given thoroughly into your hands. You cannot imagine the work above it. It is also thoroughly in your hands. You have not yet begun the work waiting for you for the other worlds - as you see here - I mean this world; the epidemic, these are also in other worlds but the type is different.

The sages of the other worlds are in daily prayer to Almighty to have such a man to create in them the power of refined spirituality. Who will do this work, nobody but yourself. Nature has brought you up for the same purpose.

Everybody here is seeing you and expecting the same fom you. Be alert and go.

(7.00 PM). You are on the eve of your programme. I simply remind you. Rise at dawn. One of us will make you awake. Go to latrine and take bath.

10-1-1946

हज़रत क़िब्लाः आदमी को जब ख़ुदा ने नफ़्स दिया तो वो ज़िम्मेदार क्यों रखा गया। अक़्ल भी साथ-साथ दी है। और इसी से स्वतन्त्र (आज़ाद) कहा गया है। बारीक बात क्या हुई? पवित्र बुद्धि किसे कहते हैं? कितनी मुश्किल बात है। अगर solution दूं तो गुमराह हो जाये और मश्क़ करे तो बेवकूफ़ हो जाये। मुशाहिदा करो और जवाब लो।

S.V.: This is the stage not common. Your Lord has talked of something else. Who enters it - one who is lost.

There is nothing above it and nothing beyond.

Why the people weep - knowing that one comes to die. Advert wisdom. Why so? Too much towards worldly affairs.

The stage of happiness is foolishness, without it there can be no good. Foolishness is the real stage; wisdom!

Does anybody claim to enter the stage of foolishness. Who likes to be so? Is there any example in your Satsang?

(MM): Was anybody asked to become so? Sir!

Answer: I tell you to become so.

Mental fatigue is the highest copy of the Nature.

Drawback is weakness. Riches are Gold. Leave the riches. Sleep carries the whole thing. Dream recovers it. Recovery is wasteful. Awakening is the real (or mere) dream. What then - Nothing - Zero - Globe. Para II. Old age - End. Childhood love. Think yourself in the stage of childhood love, when love begins - when mature. End of life. Immense wealth: young age. Bishop - loser. Pope, greatman, Death = sorrow.

Kindness (of God) : Death

With reception - what reception - connection towards God. Folly wisdom and wisdom folly. Both negative.

11-1-46

हज़रत क़िब्लाः अच्छा बताओ, सज्जादा नशीन की क्यों ज़रूरत है? क्या क़ुदरत मौजूद नहीं रहती?

12-1-46

हज़रत क़िब्लाः शेर : नमी गोयम कि अज़ दुनिया जुदा बाश। ब हर कारे कि बाशी बाख़ुदा बाश।।

(अर्थात : मैं नहीं कहता कि तू दुनिया से अलग रह बल्कि हर वो काम जो तू करता है, उस में ख़ुदा को साथ रख।) अगर किसी शख़्स ने ऐसी हालत पैदा कर ली है तो इस का मतलब यह है कि वो प्रार्थना ही की हालत में है। हर वक़्त रुजूअ रहने का मन्शा यह है कि उस ने

अपने मालिक को मालिक, और अपने आप को बन्दा समझ लिया है। रिशता-बन्दगी क़ायम हो चुका है। खुदा को ख़ुदा समझ चुका है और बन्दगी के असल उसूल पर आ चुका है। क्या यह हालत हर शख़्स की हो सकती है? हाँ, मगर, काफ़ी मुज़ावलत के बाद। जिस की यह हालत हो चुकी है वो प्रार्थना के दायरे में है। उस को इख़्तियार है कि अपने मालिक के सामने नम्रता (आजज़ी) के साथ जो चाहे सो रख दे। हर शख़्स को प्रार्थना के वक़्त इस शक्ल में आना पड़ता है। तब ही दुआ मुस्तजाब होती है। यह रिशतए मुहब्बत है जो अपनी हद में क़ायाम कर के मालिक की हद तक पहुँचाया गया है। यह वो तार है जो टूटने (यानी तोड़ने) से नहीं टूटता, अगर एक दफ़ा जुड़ चुका है। मन्ज़िल बहुत दूर है, यह सब जानते हैं। मगर ख़याल ऐसी चीज़ है कि उस को आसान कर देता है। प्रतीम की याद प्रेमी को उस से क़रीब तर कर देती है। इस रिश्ते की हद में जितनी मुहब्बत और प्रेम पैदा किया जावे, उतनी ही उस तरफ़ तरक़्क़ी होती है। यह रिश्ता हम अपने साथ लाये हैं। इसी का develop करना हमारा फ़र्ज़ है। हम को यहाँ तक इस को develop या तरक़्क़ी देना चाहिये कि अपने आप हमेशा उस के क़रीबतर पावें। यह प्रार्थना की हालत भगतों की होती है और प्रेम और भगती से ही इस में मज़बूती आती है। यह वो सीढ़ी है जो ज़ात तक पहुँचा देती है। यह ही सीढ़ियाँ जाने कितनी जुड़-जुड़ कर उस हद तक पहुंचाने में मददगार होती हैं। सब मन्ज़िलें (मदारिज यानी दरजात तरक़्क़ी रुहानियत) इसी के अन्दर हैं। प्रार्थना के लिये कोई ख़ास वक़्त मुक़र्रर नहीं है। जब तबीयत ऐसी बन जावे जैसा कि ऊपर कहा गया है, प्रार्थना शुरु कर दे और अगर न बने तो

बना लेवे। प्रार्थना हमेशा उस मालिक की करना चाहिये कि जो वाक़ई मालिक है और मालिक कहलाने के क़ाबिल है। अपने बड़े हाकिम से, बजुज़ ख़ास सूरत के, प्रार्थना दुनियादारी के मामले में करना जहल और नादानी है।

प्रार्थना अल्बत्ता उस बात के लिये करना मालिक से जायज़ है जिस के लिये उस का हुक्म हो चुका है या हो। यह बात कमाले - इन्सानी शराफ़त के अन्दर आती है और इस बात की दलील है कि हम उस को दिल से (अपना) मालिक समझ रहे हैं। और अपने आप को उस के आधार पर छोड़ दिया है।

अब सवाल यह है कि प्रार्थना का ढ़ंग दूसरों के फ़ायदे के लिये कैसा इख़्तियार करना चाहिये। जवाब यह है कि उन को उसी हालत पर ले आवे जो प्रार्थना करते वक़्त अपनी बनाई गई है। यह कैसे हो? उन को मन्कूश करा दिया जावे कि हम एक आजिज़ बन्दे हैं और अदना भिकारी।

यह हालत तस्लीम व रज़ा की है। जो दरगाहे आली में अपनी हैसियत (यानी दीनता) से रुजूअ हो रहा है। और उस को चाहिये कि जो कुछ भी हो अपने मालिक के सामने सब रख दे और मालिक की मौज के ताबेअ हो जाये, यानी सब कुछ अपना मालिक के सुपुर्द कर दे। और अपनी ख़ालिस सूरत इख़्तियार कर ले। सब तरफ़ से सिमट सिमटा कर उस तरफ़ हो जावे। इस तरह पर कि दुनिया तीरोतार मालूम होने लगे। सब की याद उस एक याद में शामिल हो जाये और हर ज़बान (यानी रोम-रोम, ज़र्रा-ज़र्रा) से याद ही याद बाक़ी

रह जाये। इसी को फ़नाए मुतलक़ कहते हैं। अगर यह हालत इन्सान (अपने में) पैदा कर ले तो मैं समझता हूं कि सरापा उस को प्रार्थना समझना चाहिये। और उस का हर ख़याल वो ही होगा जो मौज मालिक की है।

दोहाः जो कुछ होगा मोज से होगा, मोज का लीहो सहारा।

वो कभी ऐसी तरफ़ रुजूअ नहीं होगा जो ख़िलाफ़ मन्शा-ए-ईज़दी हो। वो वही चाहेगा जो मालिक का हुक्म होगा।

ऐसी प्रार्थना करने के लिये लोग बनाये जावें। अगर किसी शख़्स ने इस को पूरा कर लिया या इस हालत में बैठ गया तो बताओ तो सही कि उस को फिर क्या करने को बाक़ी रह जाता है। सिवाए उस की याद के, और फिर याद भी कैसी, जो कभी ने आवे।

बड़े-बड़े लोग इस हालत को तरसेत चले गये मगर इस का किनारा (यानी छोर) न मिला। आरज़ू ही रह गई।

क्या **रामेशर प्रशाद**, तुम समझते हो कि यह बात ऐसी मामूली है, जैसी कि पूछी गई। वहाँ क्या है, अगर बताऊँ तो अश-अश करने लगोगे। अच्छा तुम्हीं बताओ। वहां पर बे-इख़्तियार सादगी है जिस में लहर (vibration) की सूरत होते हुये भी नहीं कही जा सकती। तेज़ी और उठान तो दर किनार। उजैला कह लो, मगर क्या यह सही है। उजैला न सही, अन्धेरा कहो तो क्या सही हो जायेगा। हरगिज़ नहीं। अब क्या है, वो हालत जो आँअज़ीज़ को पसन्द नहीं आती है और **रामचन्द्र** घुट कर रह जाता है।

वो क्या है? जहां पर हर चीज़ का ख़ात्मा होता है और उस जगह पर पहुंचता है जो सब का मुब्दा और अस्ल है। भाई, अस्ल तो यह ही है जो मैं ने कहा। यहीं पर जुम्ला stages ख़त्म होते हैं। इस के आगे मैं क्या कहूँ। ख़ुदा वो वक़्त लावे कि तुम सब पर रोशन हो जावे। आमीन! अब क्या बात बाक़ी रह जाती है। उन से पूछो तो फिर लिखाऊँ। ग़ुलामों से प्रार्थना करना मैं जायज़ नहीं समझता यानी उन शक्तियों से जो इन्सान के मातहत कही गई हैं। और उसी से (यानी इन्सान से) उन को ताक़त मिलती है। ज़माने के असरात ने उन को भी मदक़ूक़ कर दिया है।

एक सवाल उन का (**रामेश्वर प्रशाद** का) कर्म फ़िलास्फ़ी पर भी है। इस में बहुत से बेहूदगियां भी शमिल हो गई हैं। और उन का असर जुदागाना हो रहा है। लिहाज़ा हर बेहूदग़ी का जो इन्सान की तरफ़ से है, जवाब नहीं दिया जा सकता। इस लिये कि आज आप बेहतरीन ख़याल में हैं और कल को उस के बरअक्स। कोई ख़याल बांधने लगे और बांधते-बांधते उस को पुख़ता कर लें तो उस की ज़िम्मेदारी उसी शख़्स पर रहेगी जिसने ऐसे ख़याल बांधा है। और ऐसा ही हिस्सा (सिला) उस को मिलेगा। मोटे उसूल ज़रूर बतलाये जा सकते हैं जो महज़ क़ानूने क़ुदरत पर मब्नी हैं, और मुमकिन है कि मैं ने कहीं कहा भी हो। मुलाहज़ा कर लेवें। फिर जो समझ में न आवे, मुझ से समझ लें।

S.V.: My Lord today has said much about Prarthana. I want, when such thing has been laid before you; you should follow it. I speak much of Rameshwar Prasad who was curious

enough to know it. I give him this duty, as much as to yourself, but remember the people will reach the सरल अवस्था really wanting. How to introduce it is the question. First follow it, then do others to follow. This is the root cause of the success in spiritual line. If the training be started in this way, that is beginning with Prarthana, it will be useful in the advancement. Prayer in this form for the beginners.

O, Master - Ye are the real goal of human life,
We are yet but a slave of wishes
Putting bar to our advancement.
Ye are the only God and Power
to bring me up to that stage.

That should be daily recited by everybody. Translation may be done in good form. That is the सरल प्रार्थना to be recited as well as by beginners and all of you. Those who have come to that stage of spirituality as to live in it permanently, they are exempted.

The last stage, I mean your Master has related through you this morning. I had given a dictation on your way to Sikar (state). Relating to that I would say, the point you have discovered recently is the higher one. Much of the spirituality is to reveal from you. I have said enough about this point. These are the Secrets of Nature.

Nature is such a simple thing-the simplest in his own form. The simplest can achieve it - One who remains behind the curtain sees it as a traveller or wanderer. One who enters

in it feels himself beyond his own limitations; after it is nothing - nothing and nothing. When that stage is passed off he feels what .... (नोट : कहने में नहीं आता) The stages are after and after and continually going till who says what happened. I want that all of you to at least reach there.

14-1-1946

S.V.: Before the world was born, the state of calmness prevailed all over - nothing but calmness. The world when brought to the present form, it took the innermost point rooted deep in the hearts of the persons, so descended. The point which thus came as a part of the big thing, necessitated others to get it up in its own place. We do the same in Prarthana. We try to be in its centre. How can it be possible? When we make ourselves so. For that making we try our utmost by certain practices - I mean to bring it up in the level of Almighty (ज़ात).

MM : How to bring it to His level?

Ans.: Be the Nature's will. Simple and calm. The thing seems difficult but it is really not. But for whom? Who really wants to go in it.

If one succeeds in its promotion, it means that he is in the state of Prarthana. The state comes to all who go really towards it. If a man creates that stage for a moment, his prayers are heard favourably. The state requires daily practice. I have logically described the stage of Prarthana

and its beginning. If I repeat the same again it will be nothing but the repetition of the words - My Lord has said in his turn.

हज़रत क़िब्ला: भाई जान, तुम जो कुछ कर रहे हो यह सब प्रार्थना ही तो है। अब इस की जिला देने के लिये जैसी सूरत चाहो, इख़्तियार कर लो। मतलब से मतलब है। दक़ीक़ बात किताबी शक्ल में नहीं आसकती तावक़्ते कि उस का क़िस्सा कहानी से बयान न किया जावे और मिसालें पेश न की जावें। इस के लिये दिमाग़ चाहिये कि मतलब से भी न हटे और बात पूरी खुल जाये जो सही हो।

15-1-46

हज़रत क़िब्ला : मराक़बा ख़ास बताता हूँ। किसी ऐसे आसन से बैठ जाये जिस से तबीयत न उकताये। मतलब यह कि आसान हो।

तरीक़ा : पहले यह तसव्वुर बांधे कि जुमला हवास साफ़ हो गये हैं। कर्म इन्द्रयाँ और ज्ञान इन्द्रियों ने अस्ल सूरत इख़्तियार कर लीं। Will बांध दे कि ऐसा हो गया। यह एक मिनट का काम है। मतलब यह है कि उस में (ज़ात में) शुद्ध हो कर जाना चाहिये। उस के बाद यह ख़याल करे कि जमीअ हवास ख़म्सा अपने अस्ल में लय हो गये हैं। और वो कामिल इख़लाक़ जो था और जिस पर पहुंचना है, उस की जगह पर आ गया है और उस की वही इख़लाक़ी सूरत पैदा हो गई है।

नोटः जिस किसी में जो बात ज़्यादा हो उस को इस के साथ ज़रूर ले लें। मराक़बा जब ख़त्म हो जाये तो उसी ध्यान और तसव्वुर में उठे

यानी कि यह बात हो गई है। जिस की पहुँच **आलमे कुबरा** तक हो गई हो, वो इस को कर सकता है। एक बात आयन्दा के लिये, तर्जुबे के लिहाज़ से, यानी जैसा कि इस गिरे हुये ज़माने में हुवा है। मैं ज़रूर कहूँगा कि हर मराक़बा मुफ़ीद नहीं होता जैसे कि लोगों ने ईजाद कर रखे हैं और कर देते हैं। मराक़बा वो ही सही होगा जिस को उस का बुज़ुर्ग Tally कर दे। और वो कैसा हो कि जिस की मरास्लत ऊपर से हो।

16-1-1946

हज़रत क़िब्ला : निर्मल माया : आग़ाज़े आलम से पहले, जैसा कि स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया है, calmness ही CALMNESS थी। वो चीज़ जब नीचे उतरी तो अपना असल (जौहर) साथ लाई। उस की लग-भग वो ही हालत है जिस का जौहर साथ आया था। ग़िलाफ़ दर ग़िलाफ़ उस पर लिपटते गये। इस के करने वाले आप ही थे। मोजों ने दरिया की, समन्दर बपा कर दिया। बहुत से क़तरे मिल कर दरिया बन गया। असल क्या था, वो नुक़्ता, जौहर या असल जो साथ आया। दरिया की बुनियाद क्या थी, चन्द क़तरे पानी जो आबशार से गिरा और दरिया बहा दिया। मतलब क्या है कि उस क़तरे में ग़ैर ज़रूरी क़तरे शामिल हो गये कि अस्ल POINT को छुपा कर महज़ उस की अक्सी सूरत बसने लगी यानी उन को मोटा (ठोस) कर दिया।

कोई शख़्स अगर किसी चीज़ को देखे तो उस की मोटी शक्ल हमेशा निगाह के सामने आयेगी। अगर मुत्वातिर देखता रहे तो एक

वक़्त वो आयेगा कि निगाह के सामने उस की मोटी शक्ल भी ग़ायब होने लगेगी। उस का अलंकार बाक़ी रह जायेगा; और कोशिश की जाये तो यह चीज़ भी ग़ायब होने लगेगी। फिर भी अगर कोशिश करता जाये तो यह चीज़ भी जाती रहेगी यानी जिन चीज़ों ने मिल कर उस को वसीअ बना दिया है वो सब ग़ायब होने लगेंगी और आख़िर में वो ही चीज़ रह जायेगी जो वहाँ पर मौजूद है। यह बात कैसे हो सकती है, जब कि इतना अभ्यास किया जाये कि अस्ल चीज़ जो हमें हिस्से में मिली है उस की तरफ़ निगाह रखते हुये हम हर काम को अन्जाम दें। वो निगाह जो तुम ने उस पर रखी है उस को नुक़्ताए-प्रार्थना समझो। आग़ाज़ भी कह सकते हो। और वो फ़िरोआत जिस से तुम निकले हो, वो प्रार्थना की पहली हालत कही जा सकती है।

यह पहली हालत सब में मिलेगी। जब कोई शख़्स इस की शुरुआत करेगा और नुक़्ता उस का अगर वहीं जमेगा तो उस का असर उस मोटी चीज़ पर दौड़ने लगेगा। करते-करते उस की यह हालत हो जायेगी कि वो ही नुक़्ता बस उस के सामने होगा और उसी पर उस की बैठक या क़याम हो जायेगा। यह शुरु की मन्ज़िल है। जब कोई हिम्मत कर के इस point पर पहुँच जाये तो इस से अगली धार जो उतरते-उतरते मोटी पड़ गई है उस के द्वारा अपने आप को रुजूअ कर ले। नुक़्ते को बढ़ाता जाये। बढ़ाने के यह मानी नहीं हैं कि उस को फुला कर ग़ुब्बारा कर लिया जाये। बल्कि बढ़ने से यह मतलब है कि उस में वो चीज़ या power इज़ाफ़ा की जाये जो उस की अस्ल है। जब उस में तरक़्क़ी होना शुरु हो जाये और वो मोटी चीज़ जो

पहली चीज़ से बहुत हल्की और बारीक है, धीमी मालूम होने लगे और आख़िर को वो भी मादूम हो जाये तो इस के मानी यह होंगे कि अब तुम उस दायरे को पहुँच चुके जहाँ कि धीमी होने का ख़याल अभी बाक़ी है।

असल से धार की बहुत सी सूरतें नुमायाँ हो गईं। यह सब चीज़ें उतरी हुई थीं यानी अपने fountain यानी सरचश्मे से आई थीं। यह सब चीज़ें बेकार नहीं थीं, बल्कि यह ताक़तें थीं जिन्होंने मुख़्तलिफ़ सूरतों में काम करना शुरु कर दिया। और उन ताक़तों ने वहाँ पर अपना असर दिखाया जहाँ पर जैसी ज़रूरत थी। यह कुल ताक़तें अपने असल से धार की सूरतों में नुमायाँ हुईं और अपना-अपना काम दिखलाया। बच्चे की हालत सब को मालूम है कि एक वक़्त पर वो हिल भी नहीं सकता था। वो आया, उठने, बैठने, बोलने और दौड़ने लगा। गोया कि जो चीज़ें कि उस में मौजूद थीं, develop करने लगीं। इन्सान की पूरी जौलानी अख़िरकार आ ही गई।

17-1-1946

(सिलसिले के लिये देखो 16-1-46)

वो चीज़ें जो बच्चे में शुरू से ठूंसी गई थीं उन्होंने अब नश्वोनुमा पाकर जुदागाना सूरत इख़्तियार कर ली। अस्ल क्या थी, वही एक क़तरा जो हिस्से में आया। अब उस में बहुत सी चीज़ें जिन को मैं ने ग़िलाफ़ दर ग़िलाफ़ कहा है, शामिल होती गईं। यह कैसे हुआ। माँ की आदात और उस का असर, बाप के ख़यालात और

तरीक़ा तालीम। इस के आगे जो बातें उस में दूसरे के असर से पैदा हो गईं। उन सब ने बज़ाते ख़ुद ACTION करना शुरू कर दिया और जल्दी असरात क़ायम कर दिये और वो चीज़ें जो ऐसे क़ायम हुई थीं, उस में भी action होता रहा। ग़र्ज़ेकि कहाँ तक कहा जाये। action दर action होते ही चले गये। नौबत ब ईजाँ रसीद कि उस को इस हालत में ले आये कि उस को इस बात की क़तई ख़बर न रही कि मैं कितने processes में होकर गुज़र चुका हूँ। अब यह जो सब action हुये उन्होंने एक ठोसता की शक्ल इख़्तियार कर ली। अब यह चीज़ (हालत) हटाये नहीं हटती। अपने में इस क़दर उस को ऐसा गिरफ़्तार कर लिया या लपेट लिया कि उस को यह ख़बर भी न रही कि क्या हो गया।

आगे और गुल खिला। उस ने दुनिया देखी। तर्ज़े मुआश्रत का असर पड़ा। चाल ढाल का असर हुआ। फ़िक्रों ने क़बज़ा किया। अब उस की सूरत कुछ और हो गई। अब इस के आगे सुनो। यह बातें जो उस में रंग की शक्ल में आचुकी थीं; उन्होंने अपने मुत्रादफ़ ज़र्रात कशिश करना शुरू कर दिये। उन पर और जिला हो गई। ख़याल फ़रमाईये कि क्या शक्ल थी और क्या हो गई। ज़र्रा (क़तरा, बूंद) को ऐसा दबा दिया कि उस की रंगत अब नज़र भी नहीं पड़ती और यह ही नहीं वो चीज़ जो अब पूरे तौर से दाख़िल हो गई है, और उस को जितना ज़ोरदार तुम ने बना लिया है और बनाये जा रहे हो, उतना ही तेज़ action उस में होता चला जा रहा है। और जितनी तेज़ी बढ़ती जाती है उतना ही ज़्यादा असर आप क़ुदरती ताक़तों से घसीट रहे हैं। जैसे आबशार की हैसियत दरिया बनने से पहले थी कि उस में चन्द

क़तरे पहाड़ से आ कर, जो उस के पीछे जमा हो गये थे, टपकते थे। अब उस को कुछ बर्फ़ न मदद की और कुछ की पानी ने। ग़र्ज़ेकि उस की तादाद और पानी की मिक़दार बढ़ती हो गई और गिरते-गिरते एक परनाले की शक्ल इख़्तियार कर ली। फिर क्या हुआ, आगे और बढ़ा। बढ़ कर कुछ पानी और इधर उधर से रिसियाने लगा। धार और बढ़ती गई। कहीं गढ़े में पहुँची, कहीं उस से ऊपर उभरी। हत्ताकि उस में ख़ुद सौत जारी हो गये। आगे क्या हुआ। पानी का चश्मा जो इधर उधर से जमा हो कर इकट्ठा हो गया था, उस में शामिल हो गया। फिर क्या था, रवानी बढ़ने लगी और इधर चूंकि शुरू के रिसियाने से मैदान और जगह पानी लेने की और भी वसीअ हो गई थी, अल्ग़ारों पानी आने लगा। दरिया यहां तक बढ़ा कि उस के लिये बड़ा लफ़्ज़ समन्दर ही हो सकता है। अब इस की हैसियत क्या हो गई। क्या इब्तदा थी और क्या इन्तिहा हुई। वो ही जो बच्चे की हालत काफ़ी नश्वोनुमा पाकर हुई थी।

दरिया की मौज। यह मौजें जो दरिया में नुमायाँ हैं इन का अस्ल और कुछ नहीं बल्कि नतीजा उन कर्मों का है जो रास्ते में मिल मिला कर यह सूरत इख़्तियार कर ली। यह वो ही मौजें हैं जिस को आख़िरपर लोग मौज तसव्वुर करते हैं। यह आलम इन्सान की ज़िन्दगी में जवानी की हालत में ज़्यादा होता है जब कि बहुत कुछ लेस पोत हो चुकती है। समन्दर की हालत वो कही जा सकती है जिस वक़्त इन्सान उस रूप में आ जाता है जिस को बहुत से action दर action का नतीजा समझना चाहिये।

एक सवाल अहम बाक़ी रह जाता है कि चीज़ को देखते-देखते वो चीज़ निगाह के सामने से क्यों हटने लगती है और सिर्फ़ अलंकार बाक़ी रह जाता है। और फिर वो भी नहीं रहता। वजह यह है कि माद्दे में माद्दे ही के देखने की ताक़त है और इस के बाद, उस के बाद ही वाली ताक़त में देखने की ताक़त है। और उस के बाद सब से बाद ही वाली चीज़ में देखने वाली ताक़त है। और फिर उस के बाद उस के बाद वाली ही ताक़त में देखने की ताक़त है। ग़र्ज़ेकि यह बाद बराबर चली जायेगी तावक़्तेकि देखने की ताक़त क़तई मादूम न हो जाये। इस के आगे भी बहुत कुछ बाक़ी रहता है जो एहसास की शक्ल में नुमायाँ होता रहता है। फिर यह भी नहीं रहता और इस के बाद वो भी नहीं रहता । और फिर क्या कहूँ। रहना भी नहीं रहता और यह भी नहीं रहता।

अब क्या होता है। वो ही negative, वो ही अस्ल। क्या कोई शख़्स इस के समझने की क़ाबलियत रखता है। वो ही जो उस तक पहुँच चुका है। अब भी ग़लती है। यूँ कहना चाहिये जो nothing और nothing में ग़ोताज़न है। भाई, यह nothing भी तो कुछ है। अगर है नहीं तो इस को ऐसा क्यों कहा। अभी और बढ़ो। अब कहने की गुन्जाइश नहीं।

एक सवाल और रह जाता है। धार उतरते-उतरते मोटी क्यों पड़ गई। दक़ीक़ है। ख़ैर अब तो कहना ही पड़ेगा। सुनो। आदमी कूदते-कूदते नीम जान क्यों हो जाता है। लोग बतायेंगे कि ज़मीन की कशिश की वजह से। कूदने से मेरा मतलब बहुत ऊँचे पहाड़ से कूदने का है। छत और दीवार से नहीं। मैं कहूँगा कि इरादा जब ऊपर से

नीचे का होता है तो ख़याल की गरमी कूदने वाले की, नीचे को मब्ज़ूल हो जाती है। गोया यह चीज़ धक्का खा कर उस से निकलना शुरू हो जाती है। इसी तरह से जब धार ऊपर से नीचे को रुजूअ हुई तो उस को ऐसा ही समझ लेना चाहिये। मोटी चीज़ से मतलब ठोसता से है और ठोसपन उसी चीज़ में कहा जाता है जिस में ज़िन्दगी न हो।

अब लोग सवाल करेंगे कि भला क़ुदरत की धार और उस में ज़िन्दगी न हो। यह कैसे हो सकता है। जवाब यह है कि हर चीज़ क़ुदरत से आई हुई है। नबातात, जमादात, मादनियात, सब इसी के नमूने हैं। मगर क्या इन चीज़ों में ज़िन्दगी कही जाती है। हरगिज़ नहीं। यह ही हाल उस चीज़ का समझ लो। इन्सान अपने आप को अपने कर्मों से उसे निस्बत दे लेता है और उसी से हम आहंगी इख्तियार कर लेता है।

23-1-46

हज़रत क़िब्लाः धर्म की व्याख्या बुज़ुर्गों ने बहुत कुछ की है। मैं समझता हूँ कोई बात उठा नहीं रखी। फिर भी समझने के लिये वाज़े तौर पर कह रहा हूँ। सुनो। एक शख़्स किसान के घर पैदा हुआ। तर्ज़े मुआशर वैसी ही इख़्तियार कर ली। हल और बैल ले कर खेत पर जाने लगा। मेहनत से अनाज पैदा करने लगा। बस यह ही ज़िन्दगी उस को प्यारी मालूम होने लगी और उसी में वक़्त बिताने लगा। यकगूना फ़र्ज़ अदा किया और करता रहा, हत्ताकि उस को मौत ने आ दबाया और चल दिया। एक फ़र्ज़ उस ने ज़रूर अदा किया। दूसरा फ़र्ज़ अदा करने को बाक़ी रह गया। इसको करते-करते अगर वो फ़र्ज़

भी अदा करता जो मक़सदे-ज़िन्दगी था और हर एक का है, तो क्या चार चांद न लग जाते। और दोनों बातें side by side रहतीं। कमी क्या थी कि उस ने सिर्फ़ उसी को देखा जो उस के पेशे-नज़र था। इस से आगे उस की निगाह ही नहीं गई और जाती कैसे। उस ने अपने माँ और बाप को इसी में तो मशग़ूल पाया था। इतनी समझ कहां कि इस point को press करता ताकि ऊपर से वो शक्ति नुमायाँ होने लगती जिसकी बिगड़ी हुई सूरत उस ने अपनी ज़िन्दगी में देखी थी। इस का अनुभव उस को कैसे होता इस से ऊपर भी कोई चीज़ है जबकि वो देखता था कि हाथ पैर की कमाई से पालन पोशन और ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी होती गई। इस का जवाब महज़ यह ही हो सकता है कि उस को इस ज़िन्दगी को निगाह रखते हुये उस तरफ़ जाना चाहिये था। और किसी ऐसे शख़्स से संगठन और मेल पैदा करना चाहिये था जो उस को उस तरफ़ ले जाता और दुनियावी ख़तरों से भी बरी रहता । और इस को भी ख़ुशनुमा बना देता।

2-2-46 9.00 PM

नसीहत **हज़रत क़िब्ला** : (ख़ास कर वकील बदायूनी के लिये) इस ज़माने में मुरीदों की तादाद गुरुओं की तादाद की तरह नज़र आती है। यानी जितने चाहे इन्सान मुरीद कर ले और गुरु भी बहुत सस्ते मिलते हैं। मगर यह बात गिरे हुये ज़माने की है। मुरीद दर हक़ीक़त वही है जो गुरु की पैरवी करे। जो गुरु का ख़याल हो, वही उस में टक्कर खाये। जो उस की मर्ज़ी हो वही मुरीद का करने को जी चाहे। मिज़ाजदानी भी ख़ास चीज़ है। यह सोहबत से हासिल होती है।

और यह ही बात उस तरफ़ ले जाती है या मदद्गार होती है। एक रुख़ हो जाना अपने गुरु पर निस्बत बढ़ाती है। घनी निस्बत का पैदा हो जाना मेरा मतलब है। यक़ीन और विश्वास का रहना इस की तरकीब है। श्रद्धा को मदद्गार बना लेना इस का ज़रिया है। ग़र्ज़ेकि कहाँ तक कहा जाये। ख़ुलासा यह है कि कोशिश करना चाहिये। जिस तरह से बने बुज़ुर्गों की मिसालें ऊँच के लिये निगाह में रखना चाहिये। जिस शख़्स के ताल्लुक़ यह ही काम हो, और यह ही काम करना हो, उस को ख़ास तौर पर हर ग़ैर ज़रूरी बात से अपने आप को मुबर्रा रखना चाहिये। मतलब यह है कि ऐसे कामों को ऐसा समझे जैसे ज़रूरियात के लिये या रफ़अ-हाजत के लिये बैतुलख़िला। ग़रज़ यह है कि इन कामों को करते हुये कोशिश करे कि अपने दिल पर ठेस न आने पाये। यह इशारा है। आदत अगर डाली जाये तो वो ख़ुद अपना हक़ जहां पर जैसा है, बना देगी। इस कुल तहरीर का मतलब क्या निकला। वही घनी और तगड़ी निस्बत अपने पीर से जिस तरह हो सके, करे। और यह सब बातें उसी में मदद्गार हैं, गो मुख़्तसर हैं। पस **मदन मोहन लाल बदायूनी** इन बातों का ख़याल रखें।

S.V.: This is first stage, not the highest one of spiritual progress. Go on and on. The distance you cannot measure. We are in the state of a fix, when we measure the distance ourselves. God is near you, no doubt.

हज़रत क़िब्लाः इस हालत को कैसे इन्साफ़ कराया जाये जो स्वामी जी महाराज ने फ़रमाई है। श्याम बिहारी लाल को भी आक़ कर दिया।

3-2-46

हज़रत क़िब्लाः इस वक़्त का तरीक़ा अजीब था। मैं चाहता हूं कि जुम्ला तालीम कुनन्दगान को जो मेरे हैं, बता दिया जाये।

जिस चक्र (लतीफ़ा) पर यक्सू हो और उस को capacity के मुताबिक़ खोलना चाहे, तवज्जह देता रहे। यह सब जानते हैं। ज़रूरत इस अम्र की है कि उस में अपनी will से यह तहरीक पैदा कर दे कि उस में यह माद्दा पैदा हो गया है कि अपने खुलने के लिये ख़ुद ब ख़ुद कोशाँ हो रहा है और उसी की तरफ़ जा रहा है यानी उस में ऐसी power पैदा कर दे जो अपनी हिम्मत और कोशिश से इस तरफ़ खुलता हुआ चला जाये। यह बात तजुर्बे से अच्छी एहसास हो सकती है।

हर चक्र पर जब सिर्फ़ उसी को लेना मक़्सूद हो, किया जा सकता है। और इस से बहुत बड़े-बड़े काम लिये जा सकते हैं। यह तरीक़ा उस के लिये बहुत अच्छा रहेगा जिस के पास आने के लिये वक़्त कम है।

4-2-46

हज़रत क़िब्लाः मैं ने सोच लिया है कि उस वक़्त के अन्दर जो स्वामी जी ने दिया है (यानी यकुम अप्रैल सन् 46 ई० तक) उन लोगों को आक़ कर दूंगा जो ईमान न लायेंगे। मैं कुछ लोगों **(चतुर्भुज सहाय, श्री कृष्ण, श्याम बिहारी लाल)** को आक़ कर भी चुका हूँ। उन को, जिन से उम्मीद बाक़ी नहीं रही, बतादूँगा।

S.V.: You will start afresh your work. Really, a year after the announcement in the Bhandara (31st March, 1945). You will write in your note that you commenced work from 2nd April. 1st April is open to foolish only. Let them work. For you 2nd April is the fit date.

6-2-1946

हज़रत क़िब्लाः मैं ने आज **गंगा सेवक** को जो हिदायात की थीं; उन पर उन्होंने अमल किया। चुनाँचे उन का connection फिर दुरस्त कर के सिलसिला सहज मार्ग जोड़ दिया गया। फ़क़त।

नोटः आज बरोज़ बसंत पंचमी को **हज़रत क़िब्ला** का जन्म उत्सव मनाया गया।

8-2-46

गोतम बुद्धजी : मुझ को कहीं भी शान्ति न मिली। मिली तो दिल ही में मिली। किताब (Lord Buddha and world fraternity by Uma Shankar Sakyasena, Mukhtar, Etah and late disciple of my Master) किताब पढ़ रहे हो। तारीफ़ें सुन रहे हो। मगर क्या यह चीज़ जो तुम्हारे लालाजी साहब (मुराद हज़रत क़िब्ला) ने बख़्शी, किसी का मिलने का इम्कान था। मैं ने जंगलों में ज़िन्दगी व्यतीत की। पत्ते चाबे, और न जाने क्या-क्या किया ताकि उस **निर्वाण** की महक ही आ जाती। आख़िरकार करते-करते यह बात हासिल हुई जिस की तमन्ना थी। कितना वक़्त लगा और कितने दिनों में हासिल हुई। ख़ुद रियाज़त की। तकलीफ़ात उठाई। बेकार ख़यालात से जंगो जदल की। झाड़

झंकाड़ को साफ़ किया, तब कहीं यह रोशनी नसीब हुई। इस के आते ही सब बातें हट गईं। तबियत में सुकून पैदा हो गया। शान्ति बेशुमार थी। सच पूछो तो यह महक **ख़ालिस निर्वाण** की है। यह एक क़िस्सा है।

अपनी सुनो। मुफ़्त में पाई, क़द्र नहीं की गई। झाड़ झंकाड़ साफ़ करने की कोशिश नहीं की गई। जज़बात को रोका नहीं गया। बस मौज मालिक कही जा सकती है।

भाईमन। ख़ुलूस तब ही होता है जब यह झाड़ झंकाड़ साफ़ कर दिये जायें। मेहनत करना चाहिये। यह काम वाक़ई तुम्हारा है। या फिर ऐसे बन जाओ कि यह सब बातें उसी में फ़ना हो जायें। मेहनत या यह तरीक़ा, यह मार्ग इस क़दर सहल बना दिया गया कि अज़मत जाती रही। किताब लिखने वाले को मैं क्या कहूँ जिस ने ऐसे गुरु से (पे) मुझ को तरजीह दी।

मेरी राय है कि ऐसा गुरु कभी पैदा नहीं हुआ। न इस क़दर किसी ने sacrifice की।

S.V.: This is the opinion of Lord Buddha about your Guru.

गोतम बुद्धजी: सरलता में मिसाल नहीं। मुहब्बत इस क़दर कि कहीं पाई नहीं जाती। यह दो बातें ऐसी हैं कि जिस में हों उस की निस्बत यही कहा जा सकता है कि रुहानियत की चोटी पर है। राय का दख़ल नहीं।

हज़रत क़िब्लाः कल रात **रामचन्द्र** ने ऐसी reasonable बात पेश की कि मुझ से रहा न गया। आख़िरकार उस ने मुझे आलमे बाला में भेज ही दिया। और ऐसी वजह पेश की कि मुझे वहाँ रहना ही पड़ा।

गोतम बुद्धजी (पहला सबक़): रुहानियत के हासिल करने में दो तरीक़े हो सकते हैं। पहला यह कि अपने आप को बिल्कुल उस में लय कर डाले। दूसरा यह कि उस को पूरी ताक़त से अपने आप में लय कर ले। हर शख़्स की रुचि पर मुनेहसिर है कि जो चाहे तरीक़ा इख़्तियार करे। आख़िर में फ़ायदा दोनों का एक हो जाता है।

आम तौर पर पहला ही तरीक़ा लोगों ने किया है। दूसरा तरीक़ा करने के लिये बड़ी ख़ास हस्ती की ज़रूरत है। और मुश्किल भी है। इस तरीक़े में वो ही कामयाब हो सकता है जो अपने जज़बात को ख़त्म कर के इस में दाख़िल हो। इतना हावी हो जाये तब शुरु करे।

तुम्हारे गुरु महाराज ने पहले ही तरीक़े से तरक़्क़ी की थी। प्रेम का तरीक़ा यही है।

मैं कहता हूं इस को हिदायत समझो कि लोग इसी से काम लें। दूसरे तरीक़े के लिये ख़ुद ब ख़ुद ऐसी हस्ती आ जावे कि इस को कमाल तक पहुँचा सके। हर शख़्स का काम नहीं।

मेरी कुल ज़िन्दगी अव्वल तरीक़े में मुहीत रही है और इसी से कामयाबी हासिल की। एक बात बताने से रह गई वो यह है कि

बेहतर तरीक़ा यही है कि अपने आप को उस में लय कर ले जो उस में (ज़ात में) लय हो चुका है। मगर ऐसे लोग कमयाब हैं। फिर भी लय करने में कुछ न कुछ फ़ायदा हो ही रहता है। आगे मन्ज़िल नज़र आने लगती है। अच्छा है।

10-2-46

गौतम बुद्धजी : (दूसरा सबक़) कल मैं लिखा चुका हूं, उस पर हर शख़्स को ख़याल रखने की ज़रूरत है। हर काम को गुरु पर छोड़ देना ग़लती है। सच पूछो तो उन के लिये सिर्फ़ यही काम नहीं है और ख़ास कर ऐसी ज़बरदस्त हस्ती के लिये। लाज़िम है कि ऐसे शख़्स को आराम दिया जाये ताकि उस के दिल व दिमाग़ को चैन मिले और वो उतनी मेहनत ईशरी (ईश्वरी) काम में सर्फ़ कर सके।

यह बात जो तुम्हारे सतसंग में अक्सर कही जाती है कि मैं ने सब कुछ गुरु पर छोड़ दिया, यह महज़ ख़याल ही ख़याल है। मैं समझता हूं कि ऐसा कोई शख़्स इस वक़्त तक वाक़ई तौर पर न कर सका। ऐसी मिसाल सिर्फ़ एक आध की मिल सकेगी । इस का यह मतलब नहीं है कि लोग इस को करना छोड़ दें और कोशिश न करें। ज़रूर कोशिश करें।

यह एक अजीब बात है जो **भगवान कृष्ण** ने **गीता** में फ़रमाई थी। इस के करने से पेश्तर आदमी बहुत कुछ बन सकता हैं। यह अजीब बात है । इस का पहल और आख़िर एक ही है। ऐसी हस्तियाँ बनी बनाई आती हैं, ताहम जो कुछ हो जाये, बेहतर है।

शिष्य का धर्म है कि अपने गुरु से कम से कम मेहनत ले। इस के यह मानी नहीं हैं कि आना छोड़ दे।

11-2-46

बुद्धजी (तीसरा सबक़): कल का सबक़ तुम ने सीख लिया होगा। आज नया सबक़ मैं यह देता हूँ कि हर शख़्स को अपने आप को ऐसा निर्मल समझना चाहिये जैसे कि आत्मा है। इस मराक़बे से जान पड़ने लगेगी। मुश्किलें आसान होने लगेंगी। मैं ने यह मराक़बा उस हालत में किया है जब कि निर्मलता का एहसास होने लगा था। बहुत सी छोटी-छोटी बातें रुहानियत में ऐसी हैं जिन का नतीजा कुछ अरसे बाद होता है। ऐसे समझो जैसे कि बच्चे को सिखाते-सिखाते जब बड़ा किया जाता है तो वही बातें जो छुटपन में सिखाई गई हैं, बड़े होने पर वही नतीजा उस के इख़लाक़ में पैदा कर देती हैं। बस यही हाल हू-ब-हू इस का समझो। बच्चा तुम्हारे पास आता है। तुम उस को सिखा कर, तालीम देकर होशियार बनाते हो। जैसा इख़लाक़ शुरू में उस में डाला गया है वैसी फुरना उस में होने लगती है।

ख़याल का असर बहुत होता है। यही एक चीज़ है जो कुछ का कुछ बना देती है। ख़याल की सफ़ाई करते रहना हर शख़्स का फ़र्ज है।

जो तालीम तुम को दी जा रही है, यह एक ऐसी मुदब्बर और सरल चीज़ है कि इस की मिसाल किसी चीज़ से नहीं दी जा सकती। हर चीज़ इस से भारी मालूम होगी। आकाश की मिसाल किसी हद तक दी जा सकती है मगर उस में भी ऐब और नुक़्स है। कहने को

कह लिया जावे मगर वाक़ई तौर पर फ़र्ज़ चीज़ है । क्या मिसाल भला दी जावे। मेरे पैरो बहुत से हुए मगर असलियत किसी ने नहीं जानी।

हज़रत क़िब्ला: रुहानियत के साथ-साथ मन को उस की हवा लगती जाती है। ऐसे समझ लो। जैसे किसी मिट्‌टी वाली चीज़ में अतर लगा दिया जाये। फोड़ो तो मिट्‌टी ही निकलेगी। मतलब यह है कि उस की ठोसता कम करते चलो। यह ही धोका सब लोगों को हुआ है।

13-2-46

बुद्धजी महाराज (चौथा सबक़): मैंने बहुत मुफ़ीद बातें जो समझ में थीं, बताईं। सरलता वाक़ई रुहानियत है। इस से पहले जो बात हासिल होती है उस को माद्दी ताक़त कह सकते हैं। जितनी मन्ज़िलें हैं, सब इसी के अन्दाज़ पर हैं। यहाँ पर सब इन्द्रियाँ ख़ामोश मालूम होती हैं। उनकी हालत ऐसी होती है जैसे किसी ने उन पर क़ब्जा कर लिया हो। इससे ऊपर क़ब्ज़े का एहसास नहीं होता। बेवकूफ़ हैं जो धूवाँ धार को रुहानियत कह रहे हैं। यह ऐसी लोचदार और नर्म चीज़ है कि जिस को वाक़ई ऐसा कहना या ख़याल करना ग़लती है। मतलब यह है कि इन लफ़्ज़ों से जो तर्जुमा दिल पर होता है, वो वाक़ई अस्ल हालत से कई गुणा भारी है। क्या कहूं।

हज़रत क़िब्ला : इस हालत को **अकर्ता** कहते हैं।

बुद्ध जी: ऐसी हालत में ईशरी (ईश्वरीय) बातें आना शुरू हो जाती हैं। मुबारक हैं जो इस का मज़ा चखें।

19-2-46

हज़रत क़िब्लाः सच्चे मायनों में किसी ने फ़नाईयत हासिल नहीं की। खींच खांच कर मैं इजाज़त के stage पर लोगों को ले आया। फ़ायदा लोगों को ज़रूर होने लगी। इल्म फैलने लगा। सच पूछो तो मुझे इस इल्म की बुनियाद डालना थी। कोई ऐसा न मिला जिस को उस हालत से इजाज़त दी जाती जो अस्ल है। जलदी की गई।

यह जवाब अज़ीज़ **रामचन्द्र** के सवाल का है। उस ने मेरे सामने यह बात पेश की कि हुज़ूर के सामने के जो इजाज़त याफ़्ता थे उन में ऐसे नुक़्स क्यों बाक़ी रहे जिस से गरदन फ़राजों के ऐब झलकते हैं। अज़ीज़ रामचन्द्र ने शेर अर्ज़ किया :-

जिस को मिल गई गांठ हल्दी की,

उसने समझा कि हूं मैं पन्सारी।

फ़रमाया : यह शेर मुझे पसंद आया जो इस ने पढ़ा। इस इंजाज़त ने लोगों को धोखा दिया। इस से तो वो ही अच्छे थे जो इस आरज़ू में हो कर अपने को कमतर समझते थे। यह दफ़ाउल वक़्ती थी। वो प्रेम कैसा जिस में अहमियत बाक़ी हो।

भाईमन, अहमियत सिर्फ़ ठोसपन ही को नहीं कहते हैं। उस को तो ग़ुरूर कहना चाहिये।

20-2-46

महात्मा बुद्ध जी - (पांचवां सबक़): चार सबक़ मैं ने बतादिये। अब तालीम करने वाले में यह औसाफ़ होना चाहिये। उस का ज़ाहिर

और बातिन दोनों एक हो जायें। यह बात सिर्फ़ रुहानियत के लिये मैं कह रहा हूं। वरना दुनियादारी में इस के ख़िलाफ़ भी जाना पड़ता है। मतलब यह है कि दोनों बातें ऐसी समासम हो जायें या मिल जायें कि फ़र्क बाक़ी न रहे। कोई हिस्सा ऐसा न रह जाये जो इस के ख़िलाफ हो। जहां पर जैसी ज़रूरत हो वैसा ही ज़ोर मालूम होने लगे। और ख़ुद उस से आज़ाद रहे। मतलब यह है कि उसका अक्स न लेवे। यह भी शर्त है कि उभार की हालत में भी समासम रहे। मैं ने यहां ऐसा बहुत कम पाया। एक शख़्स अगर बन भी गया तो शुमार में नहीं लेना चाहिये। मतलब यह है कि हर शख़्स को इस हालत पर पहुंचने की कोशिश करना चाहिये। यह फ़र्ज़ तुम्हारा है कि ऐसी हालत में हर शख़्स को ले जाने की कोशिश करो। यह ज़रूर है कि तुम्हारी तालीम शुरु से ही ऐसी हुई और हो रही है, मगर इस का क़द्रदान कोई नहीं। मुमकिन है सोहबत से इस का मज़ा आने लगे।

यह case स्पेशल है। तालीम कुनन्द्गान सतसंग की तवज्जह इस तरफ़ दिलाउंगा। यह ही एक चीज़ है जिस के लिये मैं जंगल में मारा-मारा फिरा। कितनी तकलीफ़ें उठाईं। राज छोड़ा। मगर यह कोई कम ख़ुशी की बात थी। इस के सामने सच पूछो तो सब हेच है। इस की क़ीमत कोइ अदा नहीं कर सकता।

ऐसे औसाफ़ सब में पैदा हों। तरीक़ा यह है कि जहां तक हो सके, अपने आप को बिल्कुल लय कर डाले। हमेशा उस को यह ही दिखाई दे। ख़याल ऊँचा प्रतीत न पड़े, न पैदा हो कि इतनी बड़ी तरक़्क़ी हम ने कर ली है। कोई रुकावट (या check) अन्दर न

मालूम हो। चांदनी की तरह निखरा हुवा महसूस करे। ग़र्जेकि कहां तक इस को समझाया जाये। क्या ऐसा मर्दे-मैदान (कोई) है जो अपने आपको इतना ठंडा कर दिखाये। अफ़सोस! यह बात जो तुम लोगों को मयस्सर है, मुझे मेरी ज़िन्दगी में मिल जाती तो ख़ाक छानना न पड़ती। क्या यह वक़्त कोई मामूली वक़्त समझ रहे हो। क्या इसको फिर देखना चाहते हो। ऐसा न हो यह सब लिये हुये अपने साथ चला जाये।

प्रेमी की हालत प्रीतम ही समझता है। यह कोई मामूली बात नहीं है कि हम सब अज़खुद इधर चले आ रहे हैं। देखो तो सही बात क्या है। फ़ैलाव वसीअ। यह निस्बत किसी में पैदा नहीं हुई। क्या ऐसा गुरु मिल सकता है, जो अपनी ख़ुद ही मिसाल हो। ज़माने ने नहीं देखा। ऐसा शख़्स जब किसी में फ़नाईयत इख़्तियार कर ले, फिर क्या रह जाता है। किस की क़ाबलियत। क्या कहूं। लोग यह हालत पैदा करने की कोशिश करें। मैं आलमे-बाला पर जा रहा हूं।

S.V. : Attempt always the higher. Copy the Nature; the thing will come itself.

26-2-46

महात्मा बुद्धजी (छटा सबक़): मेरी ज़िन्दगी में लोगों ने बड़ी ख़िलाफ़तें कीं। मेरी तालीम का तरीक़ा ऐसा था कि हल्का। और यह बात बहुत तजुर्बे के बाद मालूम हुई। यह ही ढंग कल्याण (भलाई) का है। जिस में बू या महक बाक़ी रह गई **निर्वाण** से क़तई दूर हो गया। यही एक बात है जो दुरस्त करना है। सीधी-साधी हालत होना चाहिये।

जो किसी तरफ़ न झुके। ज़रा भी वज़न अगर बाक़ी रह गया तो कल्याण नहीं। बहुत से फ़क़ीर मैं ने देखे, यह बात बहुत कम मिली। कितनी आसान बात है और कितनी मुशकिल से सिद्ध होती है। रुहानी तालीम में एक बात पहुँचते-पहुँचते यह आजाती है कि अपनी कैफ़ियत का एहसास, वज़न का, जो उस के ख़िलाफ़ है, शुरु हो जाता है। इस को जब लोग पार कर जाते हैं तब अस्ल बात नसीब होती है। इसका (वज़न का ख़याल) आना भी लाज़मी है और कुछ न कुछ हर stage पर आती है। मगर इस से जर बिल्ला कोई हट पाता है।

सवाल R.C.: इस से हटने का तरीक़ा क्या है?

तरीक़ाः यह \है कि सीधी-साधी ज़िन्दगी इख़्तियार करे। रस्मो-रिवाज का पाबन्द उसी हद तक रहे जितना लाज़मी है।अपने आप को यह भी न मालूम हो कि मैं क्या कर रहा हूं। अपने को इतना नीचा गिरा दे जैसे कि एक निर्बल और कमज़ोर आदमी हो। अगर कोई शख़्स यह हालत पैदा कर ले (जो मोक्ष आत्माओं की होती है और ऊपर तहरीर हो चुकी है) तो समझिये कि आप क़रीब है या क़रीब आ चुका है। मगर यह भी एहसास नहीं होना चाहिये। इतना भुला दे कि वो चीज़ आई हुई न अपनी समझे ने दूसरे की। फिर यह दोनों बातें अपने और दूसरे की ग़ायब हों। हाँ, यह बात किस को नसीब होती है। उन को जो सब कुछ इस के लिये क़ुर्बान कर देते हैं। वो तड़प और बेकली ही रास्ता बनाती है। तड़प भी कैसी। ख़ामोश घुलना। जिस में यह बात जिस हद तक हो गई उस हद तक वो कामयाब है। शेर जो तुम्हारे गुरु महाराज फ़र्मा रहे हैं, लिख लो।

शेर :

ईं सआदत बज़ोरे बाज़ू नेस्त,

गर न बख़शद ख़ुदाए बख़शन्दा।

(अर्थात : **ए गुण साधन ते नहिं होई, तुम्हरी कृपा पाव कोई कोई**। यह सौभाग्य बाहूबल से प्राप्त नहीं होता, यदि बख़शनहार परमात्मा की कृपा न होती।)

एक सवाल कमज़ोर करने वाला यह भी है कि मैं इस हालत को पहुँच नहीं सकता। मिसालों में उन ऋषियों की मिसालें दी जाती हैं कि जो वाक़ई इस इल्म में ताक़ थे। फिर क्या होता है। यह कि ऐसे लोगों की हमसरी कैंसे की जा सकती है। (तमसीलन्) **महात्मा बुद्ध** जिस हालत को पहुंच गये हैं कोई नही पहुंच सकता।

Ideal सामने रख कर मुहब्बत करे। किसी जगह पर ना-उम्मीद न हो। और वो तरीक़े बरते जिस से उस काम में मदद् मिले यानी जो उस का Ideal है। जब तक उस हालत को प्राप्त न कर ले, चैन न आवे। उस हालत को जाने दो जहां पर कि चैन ख़ुद ब ख़ुद आजाता है, और बेचैनी पैदा करने से भी बेचैन नहीं होता। यह ही हालत है, जिस पर पहुंचना है। इस से पेश्तर चैन होना ही नहीं चाहिये। इस बात की कोशिश करो कि सब में पैदा हो।

S.V. : It depends most on the taught.

और क़सम ख़ाएं या मुसम्मम इरादा कर लें कि ऐसी हालत हम पैदा ही कर के छोड़ेंगे, और कोशिश करें।

यह बात आखरी जो मैं ने अभी कही है मैं उन से कह रहा हूं जो सिक्षा (शिक्षा) ले रहे हैं। जिस ने सब कुछ उस के लिये छोड़ दिया उस ने भी कोई कसर बाक़ी नहीं रखी। लोगों ने अकसर कहा है कि **बुद्ध जी** ने ईशरी तालीम कहीं दी ही नहीं। मेरा यह कहना है कि उस से हटा ही नहीं। मैं ने वो बात ले ली थी जो अस्ल है।

हज़रत क़िब्ला: कितनी बेहतरीन बातें तुम को मिल रही हैं। यह नुक़्ता ए निगाह जो **बुद्ध जी** ने बयान किया, बहुत अच्छा है। ख़ास लफ़्ज़ जो अज़ीज़ **रामचन्द्र** के दिमाग़ में आया वो इस हालत का तर्जुमा है।

27-2-46

S.V.: The stages of spiritualism lie on the point of zero. The point begins to expand as much as you go deeper. What is zero? Expansion of something which becomes a cover wrap up all over. What you see in it? A limitation. Break it up, then you enter the spiritual life of spiritualism. Before going to it, you have to come out of yourself removing every covering of the subtle body. The preparation should be made **inter-alia**, to remove the dots making the formation of a chain leading to destruction. By destruction, I do not mean the disunity of any limb; the idea is that you are wrappping yourself in different colours. There are, no doubt, colours in electricity. How they came into being? On account of the power house made by you. Similarly you have made the powerhouse within you, connecting it with different shades of thoughts giving

colouring and each of them going into different processes. Why this humbug? Who is responsible for it? You and nobody else.

3-3-1946 (लखीमपुर)

हज़रत क़िब्लाः मेरी उम्मीदें तुम्हीं लोगों से वाबस्ता हैं। अच्छे बनो। मेरे वक़्त के लोग क़रीब-क़रीब सिवाये चन्द असहाब के पाएमाल हो चुके। क़हर नाज़िल होगा। बच नहीं सकते। अब नई पौद से उम्मीदें हैं। रुहानियत मज़ाक़ नहीं है। न बाज़ीचए अत्फ़ाल है। फूँक-फूँक कर क़दम रखना चाहिये। वृत्तियों को रुकाना चाहिये। उन के ख़राब इस्तेमाल को रोकना चाहिये। बाग हमेशा हाथ में रहे। ज़रूरत से ज़्यादा जाने न दे। मन पर command रखे। ग़र्ज़ेकि बहुत से उसूल हैं जो क़दम-क़दम पर ख़ुद मालूम होते रहते हैं। उन के इलाज भी हैं। पित्तामारी का काम है। जोशोख़रोश की ज़रूरत नहीं। जोशोख़रोश से लोग कहीं मतलब ग़लत न समझ जायें। मतलब यह है कि साधारण हालत रखते हुये हमातन ज़ाते-बारी से चिपक जायें। इस तरह पर कि ख़ुद भी ख़बर न हो। ठन्डे दिल से। गरमी के नाम व निशान का इम्कान न रहे। मतलब यह है कि वो मसालाजात जो इन्द्रियाँ मोहइया करते हैं, उन को अपने ही तरफ़ रहने दे। लगाव न रखे। दरिया का उठान इन चीज़ों को समझे। तुग़ियानी से वासता न रखे। मद्दोजज़र से बेताल्लुक़ रहे और आख़िर में उन को ख़त्म कर दे। इन को ख़त्म करता शुरु से ही चले। एक बात मैं बहुत अच्छी और क़ीमती बताता हूँ। हर चीज़ के दूर करने के लिये।

S.V.: You can draw the things from the Powerhouse in

existence to remove such things noted above. That is the great mantrum (मन्त्र).

हज़रत क़िब्लाः हर वो बात जो दूर करना है, उस के दूर करने के लिये पावर हाउस (इशारा मिन्जानिब **बाबू रामचन्द्र**, सज्जादा नशीन) से ऐसी ही चीज़ खीचें। खयाल करे कि यह ताक़त उस चीज़ पर सरायत कर रही है जो मुंहज़ोर हो रही है। और उस का असर अज़ ख़ुद मादूम हो रहा है। सफ़ाई उन की लाज़मी है।

तरकीबः ख़याल करे कि ख़राब असर दूर हो रहा है, और हो गया। और current पावर हाउस से आ रही है जो इस मक्सद के लिये काफ़ी है। सफ़ाई करना अल्बत्ता लाज़मी और ज़रूरी है, ताकि असल चीज़ और न पावर (ताक़त) देदे। यानी असल चीज़ गन्दगी को ताक़त न दे सके। बहुत से मक़ामात यह (RC) दरियाफ़्त कर चुका है और जाने कितने और बाक़ी हैं। इस के करने के लिये बहुत वक़्त चाहिये। ख़ास-ख़ास बातें जो points के मुताल्लिक़ हैं, बतलाई जायेंगी और करना लाज़मी होंगी। कुछ बातें ऐसी हैं जिन के दरियाफ़्त करने के लिए इस को एकान्त में रहना पड़ेगा। इसलिये कि उस को फ़ैलाते वक़्त अगर disturb हो गया (तो मेहनत रायगाँ जायेगी) मसलन् तांता पूरा। बहुत कुछ पूर चुका, उस वक़्त पर किसी ने कह दिया कि फ़लाँ शख़्स आया है। फिर क्या, वो चीज़ वहीं की वहीं रह गई। और shock बैठा सो अलग। इस लिये इन बातों को बचाने के लिये बाहर जाना पड़ेगा। यह बातें आसान नहीं। इस को scientific experiment समझना चाहिये कि जहाँ एक wire में दूसरा ख़िलाफ़ wire लग गया तो चीज़ burst हो गई। यहाँ एक-एक नस में वो-वो

ताक़तें मौजूद हैं जो दुनिया को तबाह कर सकती हैं। यह सब बातें अपने अन्दर ही मौजूद हैं। बेरूनी कर दो तो माद्दी ईजाद शुरु हो जायेगी। और अन्दर रखो तो रूहानी ईजाद। इसका ताल्लुक़ ऋषियों ने नहीं रखा। वरना यह चीज़ें भी आला पैमाने पर छोड़ जाते। ज़रूरत भर ही काम लिया। फिर इस को भी ख़त्म करना पड़ा। यह बातें इस मतलब से बता दी गईं कि तरक़्क़ी रुहानी आला पैमाने पर हो या कर सको। और हर बात इसी के फ़ायदे के लिये सिर्फ़ की जा सके। इस का ख़ुद ख़याल रखे और मुवाज़ना करे और अच्छी बात ग्रहण करे। ख़राब छोड़े या उस तरफ़ (बातिन की तरफ़) इतना यकसू हो जाये कि ख़ुद ब ख़ुद यह चीज़ें उस को ख़ैरबाद कह दें।

इतना सहल उसूल जो समझ में नहीं आ सकता और यह लापरवाही कि उन को हटाने की भी कोशिश नहीं की जाती, यानी जो ज़बूँ हैं। शिकायत आम हो रही है कि लोग हर बात अपने मन की ही सी चाहते हैं कि यह होती रहे। मेरा हाल मेरे देखने वालों से पूछे। जिस चीज़ के लोग मुतलाशी हैं, उस में देर नहीं लगती। देर किस में लगती है? उन चीज़ों यानी नुक़्सों के दूर करने में या उन असबाब के दूर करने में जिन्होंने इन्सान को तहतुलसरा में पहुँचा दिया है।

मिसालरः एक ऐसा शख़्स जो लंगड़ा, लूला और अपाहज अगर कहीं शाही गद्दी पर बिठा दिया जावे तो क्या तख़्त पर बैठने और शाही हैसियत होने से उस के यह नुक़्स दूर हो जावेंगे। बस ऐसा ही इस को समझो। ख़ूबसूरती इसी में है कि सब चीज़ें वही हालत असल पैदा कर लें कि तफ़ावत न रहे। समासम हो जायें। गोश होश से सुनो और अमल करो। कांटों में लाल अगर दबा भी दिया जावे तो क्या हुवा।

अवाम की निगाह में कांटे ही नज़र आवेंगे। छुपी चीज़ बाहर आना चाहिये। सब कुछ एक हो जाना चाहिये। ख़ुद समझो। बहुत कुछ कह चुका।

दोबारा : वक़्त 11 बज कर 40 मिनट दोपहर

3-3-46 लखीम पुर

हज़रत क़िब्ला : यह इस वक़्त का dictate है। मरासलत रही। जवाब मिला। किस से? **श्री कृष्णजी** महाराज से, कि तम को अपनी औलाद समझा है। लिहाज़ा अब तुम्हारी उन से बात चीत इसी हैसियत से होगी। काम की ख़ुशी ख़ूब है। ख़ुश हुये इस बात पर कि तुम ने असलियत दी भूले भटकों को। यह restriction कि तुम अद्‌बन **लार्ड कृष्णा** को बुलाते नहीं थे, जाती रही। मैं हुक्म देता हूं कि बाअदब हो कर प्रार्थना की शक्ल में जब चाहो, बुला लो। इजाज़त है और एहकाम बराहेरास्त या ख़ुद पहुंच कर हासिल करो।

तारीख़ मज़्कूर अलसदर वक़्त 10 1/2 बजे रात

महात्मा बुद्धजी (सातवां सबक़): आज दूसरा सबक़ शुरु करता हूँ। जब इन्सान की हालत नेचर से मिल जुल जावे और कोई बात ऐसी न रह जावे जो मुक़ाब्लतन् ज़्यादा मालूम हो और इस का एहसास भी ख़त्म हो जाये, तब समझना चाहिये कि अब वो तालीम करने के क़ाबिल हुवा। मगर यह भी काफ़ी नहीं है। बढ़े जाओ, रोशनी आगे मिलेगी। यह इन्तहा नहीं है। दर हक़ीक़त तो यह रुहानियत की शुरुआत है। मैं ने यह हालत कितनी मुसीबत के बाद पाई थी। इस

हालत को पहुँचा हुवा मेरे वक़्त में कोई न हुवा। न हर शख़्स का हिस्सा है। मगर इस का मतलब यह नहीं है कि नाउम्मीद हो जावे। ऐसे लोग इन्सानों ही में से बनते हैं।

एक नुक़्स जो आम तौर पर बढ़ रहा है, वो यह है कि जिज्ञासू अपनी will power यानी इच्छा शक्ति बड़े से बड़े Ideal पर नहीं ले जाते ताकि रास्ता साफ़ होता चले।

सवाल (RC): यह तालीम कैसे दी जावे और आने वालों यानी सीखने वालों को क्या करना चाहिये जो उस तक पहुँच जावें?

जवाब : सब से उम्दा तरकीब यह है और सोहबत (सतसंग) से ताल्लुक़ रखती है। वो क्या, कि जिस के पास या जिस में यह हालत मौजूद हो, उस की सोहबत में रहे। और जो वो कहे, करे। अक़्ल को दख़ल न दे। इस लिये कि जहाँ पर यह हालत है उस की अक़्ल वहां तक नहीं जा सकती। और जब अक़्ल की पहुँच नहीं तो एहसास कैसा। इस में तो दूसरे का कहना ही करना पड़ेगा। इस की तरक़ीब बता चुका हूँ। अच्छे लोग कमयाब हैं। सीखने वाले तो मिलते हैं, मगर इस हालत को पहुँचने वाले नहीं मिलते।

S.V.: You are having very good lessons in simple form. The Vedas say the same tale. The philosophy of Vedas be transformed in that original region. The same condition which Buddha has told you just now will (pervade) the epic (Ramayana and Mahabharat). They are the deeper form of such things afloat.

नोट : अंगुलीमाल डाकू और **बुद्ध जी** का जो वाक़्या हुवा था और जिस में वो **बुद्ध जी** के क़ाबू में यानी शरण में आ गया था; वो यह था कि इसी सरल हालत को जो **बुद्ध जी** ने पेश्तर बयान की है, कुलियतन् उस में फ़ोकस (focus) कर दी थी।

हज़रत क़िब्ला यह बात अब भी हो सकती है। बड़े-बड़े दरिन्दे क़ाबू में आ सकते हैं।

4-3-46 लखीमपुर

हज़रत क़िब्ला : इस वक़्त का ख़ास तरीक़ा जो **मदन मोहन लाल** पर किया गया, वो उस को याद रखें और उस से काम लें। बाबू **मदन मोहन लाल!** क्या मैं ने **रामचन्द्र** को सज्जादा नशीन बनाने में ग़लती की? क्या ख़याल है? मैं समझता हूँ, हरगिज़ नहीं। अहल थ, दिया गया। चैलेंज करता हूँ कि ईशरी (ईश्वरी) बुद्धि इतनी तीव्र (बारीक, आला) कहीं से कोई पैदा ही कर के दिखा दे, जिस में मौजूद हो।

यह हुक्म था जिस की पाबन्दी की गई।

S.V.: When you are in the depth of ocean, Ishri Buddhi follows. It is accompanying you all the time. That is the special gift of Nature, not bestowed with generally.

If **B. Madan Mohan Lal** thinks of himself, he will find himself quite a changed man. He should do the same process himself over and over again, so that the condition so made may run smoothly all the time.

हज़रत क़िब्लाः तरक़ीबें तो अब बहुत सी ईजाद हो गईं। मगर हर

मिनट और हर लहज़ा कोई न कोई नई बात आही जाती है। यह इल्म इस क़दर वसीअ है कि इन्तहा नहीं।

S.V. : Happily going back. He (**B. Ishwar Sahai**) does not feel the arrival of great Guru. He comes often here and goes to the disciples to give rest to **Ram Chandra**. He is doing the work which **Ram Chandra** has taken in his own hand. That is all for his comfort.

हज़रत क़िब्लाः प्रभू दयाल (रिटायर्ड पेश्कार, कानपुर) का connection इसी वक़्त (1.00 PM) काट दो। (काट दिया गया।)

5-3-46

महात्मा बुद्धजी : मेरा मामला भी ऐसा बिगड़ा कि कोई शख़्स असलियत की तरफ़ राग़िब न रहा। मज़हब ही मज़हब रह गया। असलियत का पता नहीं । बस ऐसा समझो जैसा कि हिन्दुओं का। अब वक़्त है। क़ुदरत भी इस तरफ़ मायल है। यह नहीं कि मेरे सीग़े ही में तालीम की जावे। ग़रज़ यह है कि रुहानियत मिले। कल्याण हो। मौजूदा सूरत में इस तरीक़े से बेहतर तरीक़ा नहीं समझाता। क़ुदरत ने तुम में यह सब ताक़तें भर दी हैं। **सच पूछो तो सिलसिले का आग़ाज़ तुम्हीं से हुवा। ऐसे लोग आदिगुरु के नाम से पुकारे जाते हैं। मौजूदा सूरत के बानी मुबानी तुम्हें हो।** दुनिया कई बार करवट ले चुकी है। इन्तहा नहीं, कितनी बार सूरतें बदलीं। हमेशा ऐसा ही होता चला आया है। और यह ही रफ़्तार रहेगी। शुरुआत है। इस की क़द्र लोग ज़िन्दगी के बाद करेंगे। ज़माना पलटा खा चुका है। change की ज़रूरत है। हो रही है। मैं ने, सच पूछो तो तुम्हीं को

पाया। हर बात, क़ुदरत तुम्हारे ज़रिये से, खोलने की कोशिश कर रही है। सब की निगाहें तुम्हारे ऊपर पड़ रही हैं। सब से मतलब मोक्ष आत्माओं से है।

एक धोखा जो आम हो रहा है। यह है कि लोग तुम्हारी हालत का सही अन्दाज़ा नहीं कर पाते। वजह कमाल फ़नाईयत है। सतसंग में लोग इस बात की क़द्र नहीं करते जो अस्ल है और दी जा रही है। इस तालीम की क़द्र लोगों को कैसे मालूम हो जो इस क़दर हल्की हो और असलियत से किल्कुल मुल्हक़ हो (ताल्लुक़ हो) तुम ने अपने गुरु महाराज से ज़्यादा तरीक़े में असलियत और ख़ुलूस को ले लिया। यहां तक कि लोगों की उस तक पहुँच नहीं । मजबूर हो। जल्दी इसी में है।

यह आख़री हालत है जो शुरु ही में दी जा रही है। भला साचो तो सही किस क़द्र वक़्त में कमी हो गई। वाह! गुरु हो तो ऐसा ही हो जिस ने कुल अपनी कमाई ज़िन्दगी में ही दे दी हो।

ख़ुलूस की वजह यह है कि बाद जो कुछ उन् को (तुम्हारे गुरु) हासिल था सब दे डाला, फिर वो कैफ़ियत क्यों न आवे जो मोक्ष-आत्माओं की होती है। यह बात हमेशा बुज़ुर्ग की ज़िन्दगी के बाद ही हो सकती है। मगर हर शख़्स को यह मल्का नहीं। और न हर शख़्स का हिस्सा है। तुम ने एक बात महसूस नहीं की। मैं ने भी सब कुछ दे डाला।

निर्वाण का रास्ता बहुत कुछ बता चुका। तालीम के बारे में भी इशारतन् सब कुछ कह दिया।

अब सुनो, जिज्ञासू में क्या वस्फ़ होना चाहिये। चन्द मोटी-मोटी बातें बताता हूँ। क़ुदरती तो यह है (1) कि उस को हल्कापन पसंद हो। (2) दिमाग़ की सलाहियत मद्देनज़र हो (3)Duties का ख़याल क़ायम हो (4) बुज़ुर्गों के अदब का लिहाज़ हो। (5) तबीयत ऐसी हो कि माक़ूल बात मान जाये। (6) हठ न हो। ज़िद्दी नेचर यानी हठ सिर्फ़ इस.क़दर हो कि असलियत के ग्रहण करने में और ख़्वाहिशात के दूर करने में मदद्गार हो। (7) बेजा हठ न करे। (8) उसूल की पाबन्दी जो रोज़मर्रा के हैं, ज़रूर करे।

हज़रत क़िब्ला : बुद्धजी ने यह मोटी-मोटी बातें बता दी हैं। यह असर रखती हैं। ज़ाहिर से बातिन शुद्ध होता है। **कर्मकाण्ड** से दर हक़ीक़त यह ही फ़ायदा है। मोक्ष नहीं मिलती। तमाम उम्र लोग यही करते रहते हैं। और ठीक भी है। इसलिये कि इस के मुतलाशी बहुत कम हैं। अस्ल में इस को साधारण तौर पर करना चाहिये। और यह फ़र्ज़ भी है। इसलिये कि यह बहाना है असलियत पर जाने के लिये, या यूँ कहो कि यह ज़ीना है।

मैं ने देखा है कि लोग कर्मटों की धुत बांध देते हैं और समझ लेते हैं कि ख़ुदा इसी में है। उन की (कर्मटों की) गरमी उन को यक़ीन दिलाती है कि मामला ठीक है। अगर किसी शख़्स को करमट के ज़रिये से नुक़्सान पहुँचा दिया तो समझ लिया कि सिद्ध हो गये। यह इन्तहाई बात है। जिस पूजा से नम्रता (Namrata, आजज़ी) पैदा न हो, बेसूद। यह सब बातें अगर प्रार्थना की शक्ल में की जायें तो नतीजा अच्छा निकले। आला बुनियाद हिन्दुओं की पार्थना ही से पड़ी।

6-3-46

महात्मा बुद्धजीः तक्लीफ़ात जो मैं ने अपनी ज़िन्दगी में उठाईं, अगर हिसाब लगाया जाये तो उन के मुक़ाबिले में यह (तुम्हारा दर्द) कोई चीज़ नहीं।

7-3-46

याज्ञवलक्य जीः मुझे यहां आने से बडी खुशी हुई। कुछ नहीं रखा जो तुम्हारे गुरु महाराज ने तुम को न दे दिया हो। मैं तुम को इजाज़त देता हूँ। काम संभालो। अंधे हैं, सूझता नहीं। ऐसी हस्ती पैदा हो गई, फिर भी आंखें न खुलीं। यह मौजूदा तरीक़ा **राजा दशरथ** से सत्तर (70) पीढ़ी (Pedigree) पहले से रायज है।

ब्राह्मण कुल की अज़मत रामावतार के बाद हुई। हर शख़्स ब्राह्मण था। वो जो ईशर को जानता था या ब्रह्म रूप हो चुका था। वेशिया (तवायफ़, कसबी) की औलाद भी अक़सर ब्राह्मण कहलाई। फ़रायज़ अपने ठीक तौर से छत्रियों (क्षत्रियों) ने ही पूरे किये। कुल की अलेहदगी ने अहंकार पैदा कर दिया। सब को मालूम हो गया कि यह ब्राह्मण हैं, इज़्ज़त होने लगी। गोया दूसरे मायनों में यह हिस्सा अलेहदा होगया, मतलब ब्राह्मणों का और अब तक है। यहाँ तक कि साफ़ और सुथरा रहना ही इबादत समझने लगे। इसी में अपने आप को ज़्यादा समझने लगे। यह हाल उन का है जो..... । रुहानियत जाती रही। हर काम ईशर के नाम से हुवा करता था। झट-पट काम ख़्त्म करके वापस हो।

9-3-46

हज़रत क़िब्ला : मदन मोहन की हालत अब अच्छी है। बे-कैफ़ी की तरफ़ जा रहे हैं। इस वक़्त का point अछूता था। मेरी राय है कि बुढ़ापे में अब इसी को ले लें।

10-3-46

हज़रत क़िब्लाः नफ़्स को ज़क दे दे, इस को तज़ किया-ए-नफ़्स कहते हैं।

S.V.: Why don't you reveal the secret? Why so much delay? Three days' time is given to you to reveal the secret in full details.

हज़रत क़िब्ला : इस के बाद मेरा यह हुक्म होगा कि उन लोगों के connection जिन के किसी के ज़रिये से जुड़े हुये हैं, वो भी काट दिये जायें। अब कोई बाक़ी न रखूँगा जो सिलसिले में शामिल रहने का दावा कर सके। यूं तो लोग कहा ही करेंगे मगर इस से क्या होता है।

जगमोहनः मैं भी अब अपने शिष्यों से connection रखना नहीं चाहता। कमबख़्तों की आंखें नहीं खुलतीं। सब कुछ खो बैठे। और जो है सो भी जा रहा है। भाई, एक बात मैं ज़रूर कहूंगा। किसी एक को मेरे हाथ पर बैअत ज़रूर कर लेना ताकि जगह ख़ाली न रहे। मैं ने ख़ूब देखा और देखता ही रहा। सिवाये इस नुस्ख़े के जो हज़रत लालाजी साहब ने फ़रमाया है, कोई और इलाज ही नहीं। मेरी

समाधी के बारे में लालाजी साहब जैसा अपनी समाधी के लिये भण्डारे के दिनों में करने का हुक्म देवें, वो ही मेरी समाधी के लिये कर देना। और जब तक उनकी समाधी के लिये हुक्म रहेगा, वो ही उस अर्से तक मेरी समाधी के बारे में क़ायम रहेगा। घर की हालत मत बिगाड़ना क्योंकि वो लालाजी साहब की क़यामगाह रहा है।

याज्ञवलक्य जीः आने में इस लिये देर हुई कि एक काम ज़रूरी था।

कृष्ण जी महाराजः हिन्दुस्तान में गड़बड़ी बढ़ रही है, लिहाज़ा उड़ीसा मुझ से पूछ कर जाना।

S.V : Congratulations.

याज्ञवलक्य जीः अगर कोई शख़्स इस बात की आदत बना ले कि ख़याल क़ायम रखते हुये दुनिया के कामों को करे तो बड़ा फ़ायदा है। काफ़ी रुझान और मुहब्बत से यह बात पैदा हो जाती है।

13-3-46

हज़रत क़िब्लाः मराक़बे सिर्फ़ दो तीन रखना चाहिये, आम तौर पर। अगर किसी ख़ास सूरत में किसी को कोई मराक़बा बता दिया जाये तो वो सब के लिये नहीं होता। यह तीन मराक़बे जो कल अज़ीज़ **रामचन्द्र** ने लिखे हैं, सब को बता देना चाहिये। अक्सर देखा गया है कि करते-करते लोग छोड़ बैठते हैं। या चार छह रोज़ किया फिर बेरुख़ हो गये। ऐसा मेरी ज़िन्दगी में अक्सर हुवा है।

S.V. : This is the Holi day, my Lord is there. I am opening the philosophy before him. In ancient days, the Rishis passed their lives generally in the jungle with their few disciples. They used to teach them spiritually for a year together. There was seven years' course. Two years were devoted to the thorough knowledge of spirituality in the book form and one year each for the removing of the coverings. They were given bath on this day with different sorts of flowers boiled in water which gave them early access in reaching the goal; they meant for their disciples. There were different kinds of bath, of its nature, (to) help them in removing the coverings. There are still men living in different clans in the jungle and almost in every point of the globe who enjoy the day in different colours. It is the version of the Pandits that they dedicate it to Prahlad. It is a system prevalent since the time immemorial.

हज़रत क़िब्ला : स्वामी जी महाराज ने इस सिस्टम को ख़ूब समझाया। इस में रूहानी रम्ज़ पोशीदा थे।

S.V. Raja Yakshwaku (इक्षवाकू, भगवान राम के पूर्वज) enjoyed Holi.

(Foot Note: होली हिन्दुओं का प्रसिद्ध त्यौहार है जो फागुन शुक्ल पूर्णिमा को मनाया जाता है। संध्या समय होली का पूजन होता है और रात्रि को होलि का दहन किया जाता है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में भारत वर्ष में हिरण्यकश्यप नामक एक राजा था जो भगवान को

नहीं मानता था। उस का पुत्र प्रह्लाद भगवान का भक्त था। हिरण्यकश्यप इस बात से नाराज़ हो कर अपने पुत्र की जान लेने पर तैयार हो गया; किन्तु प्रह्लाद को नहीं मार सका। उस की बहन होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि वह आग में बैठ कर नहीं जलती थी। हिरण्यकश्यप के कहने पर होलिका बालक प्रह्लाद के साथ चिता में बैठ गई; किन्तु भगवान की माया से होलिका जल गई और प्रह्लाद सही सलामत बाहर आ गया। तभी से नास्तिकता पर आस्तिकता की विजय के प्रतीक में यह उत्सव मनाया जाता है।

कुछ लोगों के अनुसार भगवान कृष्ण ने इस दिन पूतना नामक राक्षसी का वध किया था। उसी की ख़ुशी में यह पर्व मनाते हैं।)

19-3-46

S.V.: I appreciate your ideas. Will of Almighty is governing you and a strong change is necessary. Never think of your ideas like the ordinary people The work is under your command. Engage every sage of India to clear the atmosphere and to bring it to the proper level. Those who are working under you, I mean the disciples of my Lord, must devote themselves to this work, and fix the time for it. You know, why this duty has been assigned directly. The reason is best given in the notes of our Lord. We are also busy in doing the same work.

हज़रत क़िब्लाः रामचन्द्र तुम्हें ज़्यादा मेहनत की ज़रूरत नहीं। ऐसे काम ख़ुद ब ख़ुद होने लगेंगे।

S.V.: Your very idea strikes just in Zaat (ज़ात) and we abide by it.

20-3-46

S.V.: CONTROL OF PRANA. The power pervading in every atom and molecule is called Prana. It is from the beginning of the world. To control it means the control of Nature. We generally practise to free ourselves from the bonds first in ourselves by different practices of Yoga. If we are free from it, we begin to feel some thing higher in ourselves. It means that you are loosening the tie. It so happens sometimes that you are feeling yourself jumping into this state. By and by you have taken in yourself the power to some extent in you which our Lord says Ham Āhangi (हम आहंगी). When this idea is broken altogether and you feel yourself jumped into it totally, think that you have entered in this state. Swimming on and on, you will find yourself totally in one circle, the broader one. If this condition prevails, think yourself in the midst of ocean permanently. Begin to live in it. You see its sideways, ins and outs, and master the Nature.

25-3-46

श्री राधाजी : में कृष्ण जी महाराज से किसी वक़्त अलैहदा नहीं होती। मगर याद तुम्हारी भी रहती है।

S.V.: Meditation is the root cause of depriving every evil coming to you or anybody.

हज़रत क़िब्लाः स्वामी जी का मतलब यह है कि **जिस बात को दूर करना चाहो, ध्यान बांधो कि दूर हो गई। हर मर्ज़ का यही इलाज है।**

श्री राधाजी (नुस्ख़ा बराये (RC)) जल में तुलसी दल काफ़ी तादाद में डाल दिये जायें। दो घंटे के बाद वो पानी बराबर इस्तेमाल किया जाये। हर सुबह को बदल दिये जायें।

30-3-46

श्री कृष्ण जी महाराजः मुझ को फ़ना होने से रोक दिया गया। ठीक भी था। इन को काम करना है। ज़िन्दगी नहीं रहती। मगर जो काम क़ुदरत ने सुपुर्द किये हैं। लाज़मी है कि तुम मे फ़ना हो जाऊँ, इस लिये अभी और मौक़ा देता हूँ। इस अस्ना में लोगों को बना लो। वक़्त फिर तय करूँगा। तुम मेरा असली रूप जिस वक़्त देखना चाहो, देख सकते हो। अफ़सोस तुम को किसी ने नहीं पहचाना। क़द्र बाद को होगी। महात्माओं ने (तुम्हारी) सूक्ष्म और लतीफ़ हालत की बहुत तारीफ़ की। ऐसा ही सब को बनना है। कोशिश इसी की करना चाहिये। मुसलमानों में एक ख़ुमार था जो जंगलीपन में पाया जाता है। इस जोश को रुहानियत समझ बैठे। बोहतों ने इसी को ले लिया और काफ़ी समझ लिया। कुछ लोग इससे आगे भी गये। मिसालें इस की सिलसिलाए साबिक़ में (नक़्शबन्दिया मुजद्ददिया) जिस में कि तुम सब थे, मिलेंगी। मगर चन्द ही बुज़ुर्ग ऐसे हुये हैं। तवज्जह में हमेशा पहले वो चीज़ जाती है जिस के ऊपर से इमारत बनाई गई हो। यह नुक़्स था। अपने यहाँ **(सहज मार्ग)** यही चीज़ पहले दूर की जाती है। क्या

हुवा अगर ज़िन्दगी ख़ुमार में कट गई। असलियत का पता न मिला। जोशो ख़रोश में जान तोड़ी। पैदा हुये तो वही चीज़ मौजूद हो गई। यही एक बात है जिस को हटाना है।

अपने यहां हर जगह शान्ति की तारीफ़ है। क्या शान्ति में कोई शख़्स तलवार नहीं खींच सकता। मेरी सुनो। तेज़ी बजुज़ ख़ास हालत के कभी न आई (तो) क्या मेरे काम अधूरे रह गये। दरिन्दों पर क़ाबू इसी शान्त हालत से हो सकता है। यह एक ऐसी चीज़ है जैसे एक बूंद जो डांवाडोल न हो या यूं कहो कि हर चीज़ की जड़ है। ईशर में अगर यह हालत न होवे तो वो कुछ नहीं कर सकता। बिगड़ने वाली सूरत जब पैदा होती है तो उबाल की शक्ल क़ुदरत में भी पैदा हो जाती है और बनने वाले की शक्ल वो है जो हलकी कही गई। हर मन्त्र में यहां दुआ शान्त होने की मांगी है। क्यों? इस लिये कि यह ही अस्ल है। शान्ति का सबक़ जिसे सीखना हो, आवे। यही असल है। किसी ने यह ख़याल नहीं किया कि यह क्या हालत है। मुख़्तसर बात समझी। यही एक चीज़ है जिस के लिये जंगलों में ऋषि लोग मारे-मारे फिरे। तख़्त पर लात मार दी। इसी की क़ुदरत हमेशा रही है। वाह रे गुरु जो आगाह था कि यह ज़माना आ रहा है। कितनी छोटी सी बात है। करके कोई दिखाये। डींग मारना और बात है। ऐसा मल्का हर शख़्स में नहीं होता है। और बात निहायत मुश्किल है। हमारे यहां अब हिन्दुआना सिस्टम की तालीम दी जा रही है। यह चीज़ उस से (यानी पुराने सिलसिले से) बिल्कुल बरअक्स है। यहां शुरु ही से ज़ात ली गई है। यह तवज्जह (यानी तालीम) लेने में लोग (अभ्यासी) अगर लगे रहे तो मज़ा दिखायेगी। अच्छी अच्छी हस्तियाँ निकलेंगी। जिस चीज़ में नमक

नहीं होता वो फीकी और बदमज़ा मालूम होती है। इस लिये इस में भक्ति की रंगत पैवस्त की गई है। इस की तरक़्क़ी मेरे ज़माने से हुई। हुक्म है कि यह ही हालत हर तरफ़ फैला दी जाये। मैं वो नुकात खोलूँगा जो अब तक पोशीदा थे।

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लालः क़ुदरत का कितना अच्छा उसूल है, जब वो साफ़ करना चाहती है तो कोई हस्ती ऐसी बन जाती है जिस का फैलाव हर जगह हो जाता है।

31-3-46 (मुसलसल) 6.00 pm

श्री कृष्णजी महाराजः कल मैं ने बतौर outline (ख़ाका) कुछ कहा था और ज़ोर इस बात पर दिया था कि लोग अपनी हल्की हालत पैदा कर लें। यह हालत अगर वाक़ई तौर पर हासिल हो जाये तो माया से परे है। उभार, तेज़ी, यह सब बातें माया के दायरे में है। ज़माना पैदायशे आलम से ज्यों-ज्यों गुज़रता गया, माद्दियत बढ़ती गई। लोगों का रुख़ उसी तरफ़ हो गया। कोई शख़्स ऐसा न मिला जो इस को फेर देता। मेरे जाने के बाद इसी में तरक़्क़ी हुई। तरक़्क़ी करते-करते यहां तक नौबत आ गई कि लोग इसी के हो रहे। क्योंकि इस चीज़ को ज़रा बढ़ा दिया, मज़ा आने लगा और समझ लिया कि रूहानी फ़ायदा हो रहा है। जिन लोगों ने तवज्जह द्वारा बढ़ाया, इस में तरक़्क़ी हुई। क्यों कि हक़ीक़त से आगाह बहुत कम थे। इस science से वाक़फ़ियत बहुत थोड़ों को हुई। इस का राज़ बहुत थोड़ों पर खुला। बड़ी-बड़ी मेहनतें कीं । रियाज़तें की, तब कहीं इस हालत को पहुँचे। वाक़ई इस इल्म का सिखाना हर शख़्स का हिस्सा नहीं। मदद् देना

दूसरी चीज़ है। यह भी लाज़मी है कि सीखने वाला इसी कोशिश में लगा रहे। तुम्हारी ज़िन्दगी का कुछ हिस्सा ऐसा सर्फ़ होगा कि वो बातें जो इस के हारिज हो रही हैं, उन के दूर करने की कोशिश करोगे। ताकि तकमील पहुँचाने में ज़िन्दगी बाद मदद् मिले।

छटा हिस्सा समाप्त

GLOSSARY

शब्द	अर्थ
अज़ खुद	अपने आप
अज़ खुद रफ़्ता होना	बेसुध होना, अचेत होना,उन्मत्त होना।
आक़बत	परलोक, अंत
आक़बत बख़्शना	परलोक बख़्शना
आलमे-बाला	परलोक (Upper world, Brighter world)
आलमगीर	विश्वव्यापी, सार्वभौम, चक्रवर्ती।
आलैह उलरहमत	उस पर खुदा की रहमत हो
आक़ करना	To disinherit, औलाद को नाफ़रमानी के बायस हक़ूक़े फ़रज़िन्दी से महरूम कर देना।
आरज़ू	इच्छा
अक्स	प्रतिबिम्ब (reflection)
अज़मत	महानता, श्रेष्ठता
इल्हाम होना	ग़ैबी आवाज़ सुनना, आकाशवाणी सुनना।
इस्तेदाद	पात्रता, योग्यता, विद्वत्ता
इल्म में ताक़ होना	विद्या, कला,शिक्षा (ज्ञान) में पारंगत होना
इब्तदा	प्रारंभ, पहल, आदि ,अनुष्ठान
इन्तहा	अन्त, चरम सीमा, पराकाष्ठा
इस असना में	इस मध्य में (in the mean time)
उर्स	किसी बुज़र्ग या मुरशद का वार्षिक भण्डारा जो मृत्यु दिवस पर हो।
एत्दाल	समता, संतुलन (moderate)

कैफ़ियत	वज्द, तफ़सील, अवस्था, विवरण
कुलियतन्	सर्वथा (wholly, completely)
कोशाँ होना	प्रयत्नशील होना।
क़हर नाज़िल होना	प्रकोप उतरना
कमयाब	दुर्लभ, दुष्प्राप्य
ख़ुद फ़रामोशी	अपने आप को भूल जाना
ख़ुदी	अहंवाद ,अभिमान
ख़ुदाया	अहंवाद, अभिमान
ख़िज़ाँ	हेमन्त ऋतु (Autumn)
ख़िज़ाँ की हवा (बादे ख़िज़ाँ)	पतझड़ की हवा जिस से बेरौनक़्क़ी बढ़ जाती है
ख़ुलूस	निष्कपटता, सरलता, सादगी, निःस्वार्थता।
ख़ुमार	नशा
गोहर	मुक्ता, मोती, वंश, नस्ल
गोशगुज़ार करना	कान में कहना
गाढ़ी कमाई	वो माल जो कठिन परिश्रम से प्राप्त किया गया हो। (Earned by honest means and hard work).
ग़ुरबत	निर्धनता (poverty)
गुफ़्तोशनीद	वार्तालाप, कहना और सुनना
गरदन फ़राज़	अवज्ञाकारी, विद्रोही, घमंडी, अहंकारी
गोश-होश से सुनना	खुले कानों से सुनना (listen with full attention)
चारोनाचार	मजबूरन, ज़बरदस्ती

जाए क़याम	ठहरने की जगह
जान निसारी	जान न्योछावर करना
जम्मे ग़फ़ैर	भीड़
जाँगुज़ीं होना	जान पर कष्ट उठाना
ज़ाहिर और बातिन एक होना	अन्दर-बाहर एक होना
जहल	मूर्खता, अज्ञानता
जुमला	तमाम, सम्पूर्ण
जमीअ हवासे-ख़मसा	सम्पूर्ण इन्द्रियाँ
जंगो जदल करना	लड़ाई करना, जूझना
ज़बूँ	निकृष्ट, अशुभ, कमज़ोर
ज़ाहिर	प्रत्यक्ष, बाह्य रूप (external)
जक़ देना	पराजय, अनादर, लज्जा
तफ़ावत	अन्तर, दूरी, भेद
तगापो	दौड़ धूप
तमाअ	लालच
तुफ़ैल	वसीला, ज़रिया, सबब
तसलीम व रज़ा	अपनेआप को परमात्मा के हवाले करना, उसकी रज़ा पर राज़ी रहना
तुग़ियानी	तूफ़ान, जल प्लावन
तहतुलसरा	अधोलोक, पाताल
तज़किया ए नफ़्स	मन की शुद्धि
तर्जे मुआशरत	सामाजिक रहन सहन का ढ़ंग
तेज़ा ताज़ी	तीक्षणता, तीखापन
दमज़दन्	तुरंत, बहुत जल्दी
दामनगीर	मदद् चाहने वाला, हिमायत चाहने वाला

दूबदू	आमने सामने
दफ़-उलवक़्ती	टरकाना, टालना, काल यापन, दिन काटना
दुआ मुस्तजाब होना	प्रार्थना क़बूल होना
दरगाह	राजसभा, न्यायालय, किसी ऋषि, मुनि या पीर फ़क़ीर का आश्रम
दरगाहे आली	परमात्मा का दरबार
दक़ीक़	पेचीदा, सूक्ष्म, कठिन, गूढ़
नश्वोनुमा	विकास, उन्नति
निस्बत	संबंध, सम्पर्क, तुलना (relation)
नफ़्स	सांस, मन, ज़िन्दगी
नुक़्ता ए निगाह	दृष्टि बिन्दु (point of view)
पचकश	मुत्तासिब, partism, scum of society
पैवस्त होना	मिलाना (to merge)
पिदरीवबा	disease inherited from father वो बीमारी जो पिता से विरसे में मिली।
पेशा ए कसनई	चारपाई बुनने का धंधा या काश्तकारी का धंधा।
पामाल (या पायमाल) होना	पद दलित होना
पित्तामारी करना	क्रोध रोकना, दिल पर जब्र करना, दिल लगाना, मेहनत करना, सख़्ती बरदाश्त करना।
फ़ायदा रसाँ	लाभ पहुँचाने वाला (वाली)
फ़नाईयत	गुरु (या ईश्वर) की मुहब्बत और मारफ़त में डूब जाना, लय अवस्था (merger)

फ़ना-ए-मुतलक़	पूर्ण लय अवस्था (Absolute mergence)
फ़िरोआत	शाख़ें, डालियां, टहनियां, वो मसायल जो अमल से संबंधित हों।
बैअत करना	किसी गुरु का शिष्य या मुरीद बनना
बजुज़	सिवाय, अतिरिक्त
बेशुमार	अनगिनत
बायदोशायद	जैसा चाहिये, जैसा लायक़ है, मुनासिब
बिल्गूना	हर प्रकार से
बैतुलख़िला	संडास (lavatory, latrine)
बाज़ीचा-ए-अत्फ़ाल	बच्चों का खेल
बेरूनी करना	बाह्य, बाहरी करना
बातिन	अन्तःकरण, हृदय, अन्तरात्मा
बानी मुबानी	प्रवर्तक, संस्थापक
बेकैफ़ी	वो हालत जिस में कोई नशा या मस्ती न हो।
बरअक्स	विरुद्ध, उलट
मन्सूब करना	संबंधित करना
मैदान मारना	रण भूमि में जीतना
मौतरज़ होना	आपत्ति करना
मुवाज़ना	तुलना (comparison)
मुल्तजी फ़ैज	फ़ैज़ (कृपा) का प्रार्थी
मीर मजलिस	सभा, संस्था, संघ या गोष्ठी का अध्यक्ष, सरदार
मुकम्मिल फ़नाईयत	सम्पूर्ण लय अवस्था (complete or absolute merger)

मुसम्मम् इरादा	दृढ़ निश्चय
मुवाफ़क़्त	सहमति
मोअत्तल	स्थगित, निलंबित, (suspended) आलसी
मुन्तशर होना	बिखर जाना
मन्शा-ए-ईज़दी	परमात्मा की मर्ज़ी
मदक़ूक़	क्षय रोगी
मराक़बा	ध्यान
मादूम होना	लुप्त होना, मिट जाना, हट जाना
मब्ज़ूल	प्रवृत्त, झुका हुवा, लगाया गया
माद्दी ताक़त	भौतिक शक्ति
माद्दी ईजाद	भौतिक आविष्कार
माद्दियत	भौतिकता (materialism)
मसाला जात	सामान, हर चीज़, तैयारी की वस्तुएं
मद्दो जज़र	ज्वार भाटा
मरासलत	पत्र व्यवहार
मद्दे नज़र	नज़र के सामने
मुल्हक़ होना	संयुक्त होना
मुशाहदात	अवलोकन, observations, witnessing the Divinity
यकसू होना	एकाग्रचित्त होना
रम्ज़	रहस्य, मर्म
रिश्ता - ए- बन्दगी	इबादत, पूजा या नौकरी या फरमाबरदारी का नाता
रख़ना अन्दाज़ियाँ	रुकावटें
लातमाअ	जिस को कोई लालच नहीं

वसीअ	चौड़ा, दूर तक फैला हुवा (broad, vast) विशाल, विस्तृत
वाअज़	धर्मोपदेश
वबा	संक्रामक रोग, महामारी (epidemic)
वस्फ़	गुण, योग्यता
हम अस्र	समकालीन (contemporary)
हस्ब मन्शाए क़ुदरत	प्रकृति की इच्छानुसार
हमकलाम होना	वार्तालाप करना
हमातन ज़ाते बारी से चिपकना	पूर्ण रूप से परमात्मा से चिपकना
सरज़द होना	अमल में आना
सद्दे राह	बाधक
सुराब	मृग तृष्णा
सहरा नर्वदी करना	जंगलों की ख़ाक छानना
सज्जादा नशीन	उत्तराधिकारी
सरायत करना	प्रवेश करना, प्रभावित करना
सीग़ा में तालीम देना	विभाग, सिस्टम में शिक्षा देना
सलाहियत	योग्यता, पात्रता, नम्रता
शातिर	चालाक, धूर्त, शतरंज बाज़